रीवा
07 फरवरी 2025 शुक्रवार
दैनिक मीडिया ऑडीटर
रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

बड़ी योजनाओं को बंद कर सकती है फडणवीस सरकार

महाराष्ट्र (एजेंसी)। आर्थिक संकट से जूझ रही महाराष्ट्र सरकार राज्य की वित्तीय स्थिति को ठीक करने के लिए शिवभोजन थाली और आनंदाचा शिधा जैसी योजनाओं को रोकने का विचार कर

● **आर्थिक संकट से जूझ रही महाराष्ट्र सरकार**

रही है। सूत्रों के अनुसार, सीएम देवेंद्र फडणवीस ने हाल ही में कैबिनेट की बैठक में अधिकारियों से दोनों योजनाओं की समीक्षा करने को कहा। राज्य कैबिनेट ने योजनाओं के खर्च और प्रभाव के आधार पर उन्हें जारी रखने पर चर्चा की। अगले महीने मार्च में होने वाले बजट सत्र में यह फैसला लिए जाने की संभावना है। जानकारी के मुताबिक, दोनों योजनाओं से राज्य के खजाने पर सालाना करीब 1,300 करोड़ रुपये का बोझ पड़ता है।

शिवभोजन थाली योजना सीएम उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में महा विकास अघाड़ी शासन के दौरान महाराष्ट्र सरकार द्वारा शुरू की गई एक सब्सिडी वाला भोजन कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य गरीबों और जरूरतमंदों को सस्ता भोजन उपलब्ध कराना है। इस योजना में 10 रुपये की सब्सिडी वाली दर पर दो चपाती, सब्जियां, चावल और दाल से युक्त पूर्ण भोजन थाली दी जाती है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में थाली की वास्तविक लागत अलग-अलग होती है, शहरी क्षेत्रों में ?50 और ग्रामीण क्षेत्रों में ?35 सरकार बाकी लागत वहन करती है, जिससे यह आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहे लोगों के लिए एक किफायती विकल्प बन जाता है। यह योजना 26 जनवरी, 2020 को शुरू की गई थी और वंचितों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल रही है। आनंदाचा शिधा योजना राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई एक त्यौहार किट वितरण कार्यक्रम है। इस योजना का उद्देश्य दिवाली, गुड़ी पड़वा और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जयंती जैसे त्यौहारों के दौरान पात्र लाभार्थियों को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करना है। इस योजना के तहत, लाभार्थियों को छह वस्तुओं से युक्त एक किट मिलती है, जिसमें शामिल हैं।हालांकि, पूर्व उपमुख्यमंत्री छगन भुजबल ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर मांग की है कि राज्य के गरीब और जरूरतमंद नागरिकों के लिए राज्य में शुरू की गई शिव भोजन थाली योजना को भविष्य में भी पहले की तरह जारी रखा जाए। छगन भुजबल ने अपने पत्र में कहा है कि शिव भोजन थाली योजना को बंद करने की बात चल रही है, जो राज्य सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि गरीब और जरूरतमंद नागरिकों के लिए शिव भोजन थाली जारी रहे। यह संतोष की बात है कि शिव भोजन थाली पहल के कारण भूखे लोगों को समय पर दो बार भोजन मिलता है। शिव भोजन की 2 लाख दैनिक प्लेटों का वार्षिक व्यय सिर्फ ?267 करोड़ है।

संक्षिप्त समाचार

‘वो इमारत को ध्वस्त कर सकते हैं इतिहास नहीं, इतिहास अपना बदला लेता है’

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में प्रदर्शनकारियों ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग पार्टी के कई नेताओं के घरों में तोड़फोड़ की और देश के संस्थापक नेता शेख मुजीबुर रहमान के ढाका स्थित एक स्मारक में तोड़फोड़ के साथ ही उनके भित्ती चित्रों को नुकसान पहुंचाया। प्रदर्शनकारियों ने तोड़फोड़ और

आगजनी की घटना को उस समय अंजाम दिया जब मुजीबुर रहमान की बेटी और अपदस्थ प्रधानमंत्री हसीना लोगों को डिजिटल माध्यम से संबोधित करने वाली थीं। इस बीच शेख हसीना ने अपने संबोधन में कहा, ÷वो एक इमारत को ध्वस्त कर सकते हैं, लेकिन इतिहास को नहीं बल्कि उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि इतिहास अपना बदला लेता है।÷ हसीना के घर के बगल के भूखंड में बने अवामी लीग से जुड़े कई संगठनों के कार्यालय भी ध्वस्त कर दिए गई हैं। प्रदर्शनकारियों ने धानमंडी में रोड पांच स्थित हसीना के दिवंगत पति वाजिद मियां के आवास ‘सुधा सदन’ में भी आग लगा दी है। प्रधानमंत्री पद से इस्तीफे के बाद हसीना के पिछले साल पांच अगस्त को देश छोड़कर चले जाने के बाद से यह आवास खाली पड़ा था।

शहबाज शरीफ और उनके बेटे हमजा को मिली राहत

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान की एक अदालत ने बृहस्पतिवार को प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके बेटे हमजा शहबाज को आठ साल पुराने भ्रष्टाचार के एक मामले में बरी कर दिया। शिकायतकर्ता द्वारा खुद को इस मामले से अलग करने के बाद अदालत ने यह फैसला सुनाया।

भ्रष्टाचार निरोधक अदालत के न्यायाधीश सरदार मोहम्मद इकबाल ने फैसला सुनाया, जिसे सोमवार को सुरक्षित रखा गया था। अदालत के एक अधिकारी ने कहा, ‘‘लाहौर की एक भ्रष्टाचार निरोधक अदालत ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके बेटे एवं पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री हमजा शहबाज को रमजान शुगर मिल भ्रष्टाचार मामले में बरी कर दिया, क्योंकि शिकायतकर्ता ने खुद को मामले से अलग कर लिया था।’’ शिकायतकर्ता जुल्फिकार अली ने न्यायाधीश से कहा कि उन्होंने ना तो शरीफ के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है और ना ही उन्हें उस आवेदन की जानकारी है जिसके आधार पर मामला शुरू किया गया।एक राजनीतिक पर्यवेक्षक ने ‘पीटीआई-भाषा’ से कहा, ‘‘शिकायतकर्ता के बयान से पता चलता है कि विरोध का सामना करने पर कैसे सेना राजनेताओं को विभिन्न मामलों में फंसाती है और एक बार जब वो उसके पक्ष में हो जाते हैं तो ऐसे मामलों को कुछ ही समय में उलट दिया जाता है।’’ साल 2018 में, राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) ने शरीफ और हमजा के खिलाफ पद का दुरुपयोग करके राष्ट्रीय खजाने को 20 करोड़ पाकिस्तानी रुपये से अधिक का नुकसान पहुंचाने का मामला दर्ज किया था। हमजा और उनके छोटे भाई सुलेमान पंजाब प्रांत की रमजान शुगर मिल के मालिक हैं।

भोपाल में मोती नगर बस्ती के 384 मकान और 110 दुकान हटाए जाएंगे

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में बड़े बुलडोजर एक्शन की तैयारी शुरू हो चुकी है। शुक्रवार 7 फरवरी को भोपाल के सुभाष नगर इलाके में रेलवे की अवैध जमीन पर बनी मोती नगर बस्ती के 384 मकान और 110 दुकानों पर मोहन यादव का बुलडोजर चलेगा। बता दें कि भोपाल के सुभाष नगर आरओबी की ?थर्ड लेग के निर्माण और चौथी

रेल लाइन बिछाने के लिए मोती नगर बस्ती को हटाने की कार्रवाई होनी है। शुक्रवार को एमपी की राजधानी भोपाल के मोती नगर बस्ती में करीब 384 मकान/झुग्गियों को हटाने की नगर निगम पुलिस और प्रशासन की कार्रवाई होगी। गुरुवार को पुलिस और प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर लोगों से स्वेच्छा दुकान और मकान हटाने को कहा समझाया। इसके बाद दुकानदार सामान हटाते भी नजर आए हैं। दो दिन से पुलिस फोर्स ना होने के चलते मोती नगर बस्ती के मकान और दुकान पर बुलडोजर नहीं चल पा रहा था। गुरुवार की शाम को पुलिस प्रशासन सुभाष नगर विश्रम घाट इलाके से मोती नगर बस्ती तक बैरिकेडिंग करते नजर आया है। जिला प्रशासन, नगर निगम और रेलवे ने इससे पहले 4 फरवरी तक बस्ती को खाली करने का नोटिस जारी किया था जिसके बाद से बस्ती में रहने वालो को बेघर होने का डर सता रहा है। सोमवार को भी यहां की जनता बच्चों को लेकर कलेक्टर के पास पहुंची और मोहलत देने की मांग की थी। इसके अलावा अभी परीक्षाओं का समय चल रहा है ऐसे में बस्ती में रहने वाले बच्चों के सामने भी पढ़ाई का संकट खड़ा हो जायेगा। इसलिए रहवासियों ने फिलहाल प्रशासन से कार्रवाई नहीं करने की मांग की है।

संजय सिंह के बयान पर कांग्रेस उम्मीदवार संदीप दीक्षित का तंज

‘भाजपा हमारे विधायकों को खरीदने की कोशिश में है’

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव 2025 के मद्देनजर मतदान किया जा चुका है। अब चुनाव के रिजल्ट का इंतजार है। 8 फरवरी को चुनाव के परिणाम घोषित किए जाएंगे। इस बीच नई दिल्ली विधानसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार संदीप दीक्षित ने ‹क्क सांसद संजय सिंह के बयान पर कहा, ÷अभी तो यही नहीं पता कि कौन विधायक बनेगा या कौन नहीं। परसों नतीजे आने हैं, कौन विधायक होगा या कौन नहीं ये 8 तारीख को पता चलेगा। तो कोई पार्टी किसी को क्या पैसे ऑफर करेगी? इतनी घबराहट क्यों है‹क्क में मुझे समझ नहीं आता।÷ बता दें कि आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने आरोप लगाया था कि भाजपा उनके विधायकों को खरीदने की कोशिश में है। संजय ने सिंह ने गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली में अपनी हार मान ली है। हमारे सात विधायक जो चुनाव लड़ रहे हैं ऐसे

7 विधायकों के पास पार्टी छोड़ने का, पार्टी तोड़ने का, भाजपा में शामिल होने का ऑफर आ चुका है। इसके लिए उन्हें 15-15 करोड़ रुपये का ऑफर दिया जा रहा है। उन्हें‹क्क को छोड़कर भाजपा के साथ सरकार बनाने का ऑफर मिला है। संजय ने सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि हमने अपने सभी विधायकों को और उम्मीदवारों को कह दिया है कि इस तरह की जितनी कॉल आए उसकी रिकॉर्डिंग करें और इसकी सूचना दें। अगर कोई मुलाकात करने को कहता है कि तो कैमरा लगाकर वीडियो बना लें। फिर हम उसे मीडिया में दिखाएंगे।

केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली में 70 सीटों के लिए हुए विधानसभा चुनाव में 57.89 प्रतिशत मतदान हुआ है। हालांकि, अधिकारियों द्वारा सभी 13,766 मतदान केंद्रों से आंकड़े जुटाए जाने के बाद मतदान प्रतिशत में वृद्धि की उम्मीद है। चुनाव के बाद सामने आए एग्जिट पोल में भाजपा को आप पर बढ़त दिखाई गई है। बता दें कि दिल्ली में मुख्य मुकाबला आम आदमी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस के बीच है। बता दें कि संदीप दीक्षित नई दिल्ली विधानसभा सीट से कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार हैं। वहीं आम आदमी पार्टी की तरफ से अरविंद केजरीवाल और भाजपा की तरफ से प्रवेश वर्मा इस सीट से चुनावी मैदान में हैं।

टायर फटने से बेकाबू हुई बस ने कार को मारी टक्कर, 8 लोगों की मौत

नागपुर (एजेंसी)। राजस्थान की राजधानी जयपुर के दूदू में एक भीषण सड़क हादसा हो गया। जयपुर-अजमेर हाईवे पर मौखमपुरा इलाके में रोडवेज बस का टायर फटने से वह बेकाबू हो गई और एक कार को टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में 8 लोगों की मौत हो गई और 6 अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना गुरुवार दोपहर करीब 3ः45 बजे की है। रोडवेज की बस जयपुर से अजमेर की ओर जा रही थी, तभी अचानक बस का टायर फट गया। टायर फटने के बाद बस पूरी तरह से बेकाबू हो गई और सड़क के किनारे से जा रही कार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। कि मौके पर ही 8 लोगों की मौत हो गई। घायलों को अस्पताल में भर्ती किया गया है। राजस्थान की एक अन्य खबर में, बालोतरा जिले के सिणधरी थाना क्षेत्र में सोमवार रात एक कार और बोलेरो की टक्कर में 5 लोगों की मौत हो गई, जबकि 8 अन्य लोग घायल हो गए। थानाधिकारी सुरेश सारण ने बताया कि पायला गांव में एक कार और बोलेरो की आमने-सामने की टक्कर में एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि आठ अन्य लोग घायल हो गए।

यूपी के वाराणसी में आठवीं तक के स्कूल 8 फरवरी तक रहेंगे बंद

तीर्थयात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए फैसला लिया गया

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी में तीर्थयात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए अब स्कूलों को बंद रखने का फैसला लिया गया है। महाकुंभ में अमृत स्नान के बाद वाराणसी में तीर्थयात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए जिला प्रशासन ने यह फैसला लिया है। शहरी क्षेत्रों में कक्षा आठ तक के सभी स्कूलों को आठ फरवरी तक बंद रखने का आदेश जिला प्रशासन ने दिया है। इस दौरान ऑनलाइन कक्षाएं जारी रहेंगी। बेसिक शिक्षा अधिकारी अरविंद कुमार पाठक ने बृहस्पतिवार को बताया कि जिलाधिकारी के निर्देशानुसार वाराणसी के शहरी क्षेत्रों में आठवीं कक्षा तक के सभी सरकारी, शासकीय सहायता प्राप्त, सीबीएसई, आईसीएसई और अन्य बोर्ड से संबद्ध अंग्रेजी और हिंदी माध्यम के स्कूल आठ फरवरी तक बंद रहेंगे। इस दौरान सिर्फ ऑनलाइन कक्षाएं ही संचालित होंगी। पाठक ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूल खुले रहेंगे। इस दौरान सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में डीबीटी प्रोसेसिंग, आधार सीडिंग और स्कूल की मरम्मत, रंग–रोगन इत्यादि जैसे कार्य जारी रहेंगे। शिक्षकों और कर्मचारियों को इन गतिविधियों की निगरानी के लिए स्कूलों में उपस्थित रहने का निर्देश दिया गया है। बता दें कि प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ से लौटने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए वाराणसी के घाटों पर होने वाली गंगा आरती को आम लोगों के लिए पांच फरवरी तक बंद रखने का फैसला लिया गया था वाराणसी पुलिस आयुक्तालय (कमिश्नरेट) ने काशीवासियों से अनावश्यक रूप से घर से बाहर ना निकलने और श्रद्धालुओं का सहयोग करने की अपील की गई।

हेलिकॉप्टर से ससुराल पहुंची नई दुल्हन

देखने के लिए पहुंचा पूरा गांव, चर्चा में अनोखी शादी

झुंझुनूं (एजेंसी)। राजस्थान के झुंझुनूं में एक अनोखी शादी चर्चा का विषय बनी हुई है। यहां के मंड्रेला कस्बे में मंगलवार को एक अनोखी शादी देखने को मिली, जब दूल्हा अपनी दुल्हन को हेलिकॉप्टर में विदा कराकर लाया। इस अनोखी शादी की पूरे क्षेत्र में चर्चा रही। कस्बे के राजगढ़-झुंझुनूं रोड पर स्थित खान स्टोन कंपनी के वसीम खान की शादी मंगलवार को हनुमानगढ़ जिले के करणपुरा गांव निवासी नगमा बानो से हुई। शादी को खास बनाने के लिए वसीम खान हेलिकॉप्टर से बारात लेकर ससुराल पहुंचे। हेलिकॉप्टर के उतरते ही उन्हें देखने के लिए सैकड़ों लोग हेलिपैड पर उमड़ पड़े।

शादी के बाद शाम को दूल्हा-दुल्हन हेलिकॉप्टर से मंड्रेला पहुंचे। इस दौरान हेलिकॉप्टर ने कस्बे के चारों ओर चक्कर लगाए और आसमान से फूलों की वर्षा की गई, जिससे माहौल बेहद खुशनुमा हो गया। हेलिकॉप्टर की गूंज सुनकर कस्बे के लोग छतों और सड़कों पर जमा हो गए। महिलाओं और बच्चों में हेलिकॉप्टर को देखने का खासा उत्साह रहा। मंड्रेला कस्बे में पहली बार हेलिकॉप्टर आने से लोगों में जबरदस्त उत्सुकता देखने को मिली। जैसे ही हेलिकॉप्टर उतरा, भारी भीड़ उसे देखने के लिए उमड़ पड़ी। हेलिपैड पर सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए थे, ताकि किसी तरह की अव्यवस्था न हो। हेलिकॉप्टर से बारात ले जाने और दुल्हन को विदा कराने की यह भव्य शादी पूरे झुंझुनूं जिले में चर्चा का विषय बनी हुई है। लोगों ने कहा कि यह शादी एक यादगार लम्हा बन गई, जिसे कस्बे के लोग लंबे समय तक याद रखेंगे। जिस समय हेलिकॉप्टर जमीन पर उतरा, उस समय का नजारा ठीक वैसे ही था, जैसे किसी नेता के आने पर होता है।

पुणे में 63 वर्षीय बुजुर्ग की हुई मौत

गुइलेन बैरे सिंड्रोम से मरने वालों की संख्या बढ़कर 6 हुई

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे जिले में 63 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत के बाद संदिग्ध %गुइलेन-बैरे सिंड्रोम% (जीबीएस) से मरने वालों की संख्या छह तक पहुंच गई है। एक स्वास्थ्य अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि बुखार, दस्त और पैरों में कमजोरी की शिकायत के बाद बुजुर्ग व्यक्ति को सिंहगढ़ रोड क्षेत्र के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया और जांच में पता चला कि उन्हें जीबीएस है। पुणे नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया, ‘‘बुधवार को बुजुर्ग व्यक्ति की हालत बिगड़ गई और तीव्र %इस्केमिक स्ट्रोक% के कारण उनकी मृत्यु हो गई।’’ ‘इस्केमिक स्ट्रोक’ तब होता है जब रक्त का थक्का मस्तिष्क तक जाने वाली धमनी को अवरुद्ध कर देता है। अधिकारी ने बताया कि इन छह मौतों में से पांच की मौत संदिग्ध रूप से जीबीएस के कारण हुई है,

जबकि एक मरीज की मौत इस बीमारी से हुई है। महाराष्ट्र स्वास्थ्य विभाग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि तीन नए मामलों का पता चलने के साथ ही पुणे में जीबीएस के संदिग्ध मामलों की संख्या बढ़कर 173 हो गई। बता दें कि इससे पहले पुणे में 5 और लोगों के ‘गुलियन बैरे सिंड्रोम’ (त्नक्क्र) से संक्रमित होने का पता चलने के बाद महाराष्ट्र में इस दुर्लभ तंत्रिका विकार से संक्रमण के संदिग्ध मामलों की संख्या बढ़कर 163 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने सोमवार को बताया कि राज्य में इस बीमारी से अब तक पांच लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने कहा, ‘‘पांच मामले सामने आए हैं, हालांकि सोमवार को किसी की मौत नहीं हुई और 127 लोगों में जीबीएस की पुष्टि हुई है। संदिग्ध मामले 163 हैं, जिनमें पुणे शहर में 32, पुणे नगर निगम क्षेत्र में जोड़े गए नए गांवों से 86, पिंपरी चिंचवड में 18, पुणे ग्रामीण में 19 और अन्य जिलों में आठ मामले शामिल हैं।’’ अधिकारी ने बताया कि 163 मरीजों में से अब तक 47 को छुट्टी दे दी गई है, 47 मरीज ढ्ढष्ट में हैं और 21 वेंटिलेटर पर हैं। उन्होंने बताया कि पुणे शहर के विभिन्न स्थानों से पानी के कुल 168 नमूने रासायनिक और जैविक विश्लेषण के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला भेजे गए थे। उन्होंने बताया कि आठ जल स्रोतों के नमूने दूषित पाए गए। जीबीएस एक दुर्लभ विकार है, जिसमें शरीर के हिस्से अचानक सुन्न पड़ जाते हैं और मांसपेशियों में कमजोरी आ जाती है। इसके साथ ही इस बीमारी में हाथ-पैरों में गंभीर कमजोरी जैसे लक्षण भी होते हैं।

संत तुकाराम महाराज के 11वें वंशज शिरीष मोरे ने लगा ली फांसी

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे के तीर्थनगरी देहू से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है। यहां संत तुकाराम महाराज के 11वें वंशज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक शिरीष मोरे महाराज ने अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। 30 वर्षीय शिरीष महाराज ने आज सुबह अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या की है। इस चौंकाने वाली घटना से शहर में सनसनी फैल गई है। इस घटना की जानकारी मिलते ही देहू रोड पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शिरीष मोरे महाराज के शव को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भेजा। अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि उन्होंने आत्महत्या क्यों की। बहरहाल, शिरीष महाराज की आत्महत्या के बाद तीर्थ गांव देहू पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। नागरिक अपनी नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं। बता दें कि पुणे जिले में शिव विद्वान के रूप में शिरीष महाराज की बड़ी प्रतिष्ठा थी। वह शिव शम्भो फाउंडेशन के अध्यक्ष भी थे। कुछ दिन पहले ही उनकी सगाई हुई थी। घर में खुशी का माहौल था। उनकी शादी कुछ ही दिनों में होने वाली थी लेकिन इससे पहले ही उन्होंने आत्महत्या जैसा कदम उठा लिया है। पुलिस ने अनुमान लगाया है कि आत्महत्या के पीछे वित्तीय कठिनाइयां कारण हो सकती हैं। पुलिस के अनुमान के अनुसार, यह अनुमान लगाया जा रहा है कि आर्थिक तंगी के कारण उन्होंने आत्महत्या की होगी। आत्महत्या करने से पहले उसने एक नोट भी लिखा था।

मध्यप्रदेश को लगातार 7 बार मिले हैं कृषि कर्मण अवार्ड

भोपाल एजेंसी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयास से कृषि के क्षेत्र में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्यों में शामिल है। मध्यप्रदेश को वर्ष 2011-12 से 2017-18 तक लगातार 7 बार कृषि कर्मण अवार्ड से पुरस्कृत किया गया है।

मध्यप्रदेश वर्ष- 2011-12, 2012-13 एवं 2014-15 में कुल खाद्यान्न केटेगरी के लिए, वर्ष- 2013-14, 2015-16 एवं 2016-17 में गेहूं फसल के लिये और वर्ष 2017-18 में दलहन फसल के लिये कृषि कर्मण अवार्ड से पुरस्कृत किया गया है। वर्ष- 2022 में मध्यप्रदेश के भू-अभिलेखों के एकीकरण के लिये केन्द्र सरकार द्वारा फसल बीमा योजनांतर्गत उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया है।

प्रदेश में गेहूं, उड़द, मसूर, सोयाबीन, अलसी, फसलों का क्षेत्राच्छादन सबसे अधिक है। मक्का और तिल के उत्पादन में मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर है।

प्रदेश में बढ़ी चीतों की संख्या

भोपाल एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को जल्द ही एक नया टाइगर रिजर्व मिलने वाला है। माधव टाइगर अभ्यारण्य जल्द ही राज्य का 9वां टाइगर रिजर्व बनेगा। इससे चंबल अंचल में वन्य जीवों की संख्या बढ़ेगी। मध्यप्रदेश वन्य जीवन संरक्षण में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। बुधवार को कूनो क्षेत्र में 5 चीते छोड़े गए, इनमें से 3 का जन्म तो प्रदेश में ही हुआ है। इस प्रकार अब सात चीते स्वयं को मध्यप्रदेश की आबोहवा में ढाल रहे हैं। पहले छोड़े गए चीते न केवल शिकार कर रहे हैं, अपितु कुशलता से जंगल में विचरण कर रहे हैं। प्रकृति, जीव जगत और मानव जीवन के संतुलन की यह अनमोल झलक राज्य में दिखाई दे रही है। सभी लोग इस आनंद और रोमांच का अनुभव कर रहे हैं। यह वन्य जीवों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह इस बात का प्रमाण है कि मध्यप्रदेश में वन्यजीवों के लिए सबसे अनुकूल वातावरण है।

स्कूटी खरीदने के लिए सभी जिलों को राशि भेजी गई है-मुख्यमंत्री

भोपाल एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा प्रावीण्य सूची के बच्चों को स्कूटी का वितरण किया जा चुका है। अब बच्चे अपनी पसंद और आवश्यकता के अनुसार पेट्रोल या इलेक्ट्रिक स्कूटी खरीद सकते हैं। इसके लिए सभी जिलों को राशि पहुंचा दी गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आधुनिक समय में बच्चों के बौद्धिक विकास में लैपटॉप सहायक है, जल्द ही कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों को लैपटॉप के लिए राशि अंतरित की जाएगी। विद्यार्थियों को जो अपनी प्रतिभा, मेहनत और लगन के बल पर उपलब्धि अर्जित कर रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित करना राज्य शासन का दायित्व है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से जो विद्यार्थी प्रावीण्य सूची में आ रहे हैं उन्हें राज्य सरकार द्वारा स्कूटी और लैपटॉप प्रदान किए जा रहे हैं।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कॉल-सेन्टर में 550 से बढाकर 800 की गयी चैनल संख्या

भोपाल एजेंसी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली उपभोक्ताओं को बेहतर तथा गुणवत्तापूर्ण विद्युत उपलब्ध कराई जा रही है। इसके साथ ही उपभोक्ताओं की शिकायतों के त्वरित निदान करने के लिए केन्द्रीयकृत कॉल सेंटर 1912 का लगातार उन्नयन करते हुए इनकमिंग चैनलों की संख्या को 550 से बढाकर 800 किया गया है। इससे उपभोक्ताओं के अधिकतम कॉल सुने जा सकेंगे। कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने बताया कि कॉल-सेंटर का उन्नयन होने से वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान कंपनी को कुल 89 लाख 96 हजार 106 कॉल प्राप्त हुईं, इनमें से 99.64 प्रतिशत कॉल को सफलतापूर्वक सुना गया है। इसी तरह शिकायत निराकृत करने में भी तेजी आई है।

प्रबंध संचालक ने बताया कि कपंनी द्वारा आई.व्ही.आर. तकनीक, वाइस बोट, व्हाट्सएप-चेटबॉट, उपाय एप के माध्यम से 24ङ्क7 सतत् मॉनिटरिंग कर प्राप्त शिकायतों का निराकरण किया गया है। इन माध्यमों से वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्राप्त 15 लाख 95 हजार 123 शिकायतों को दर्ज कर उनका समाधान सुनिश्चत किया गया। इसी अवधि में प्रतिदिन 500 उपभोक्ताओं का फीडबैक लेते हुए कुल 1 लाख 54 हजार से अधिक उपभोक्ताओं से बात की गई। ज्यादातर उपभोक्ताओं ने कंपनी की सेवाओं को बेहतर बताया तथा कुल 99.79 प्रतिशत उपभोक्ता अपनी शिकायतों के समाधान से पूरी तरह संतुष्ट हुए।

प्रबंध संचालक ने कहा है कि विद्युत प्रणाली का उचित रखरखाव कर उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण एवं अनवरत विद्युत प्रदाय करने के लिए कंपनी कृत-संकल्पित है। उपभोक्ताओं की विद्युत संबंधी शिकायतों के त्वरित निराकरण के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में कंपनी क्षेत्रांतर्गत 12 निम्नदाब उपभोक्ताओं के लिए एवं 4 उच्चदाब उपभोक्ताओं के लिए एफओसी (शिकायत निवारण केन्द्र) का सृजन एवं नए लैडरयुक्त वाहनों की व्यवस्था की गई है।

बावड़िया चौराहे से आशिमा मॉल तक बनने वाले आरओबी का निर्माण जल्द शुरू होगा

भोपाल एजेंसी। बावड़िया चौराहे से आशिमा मॉल तक नया आरओबी (रेलवे ओव्हर ब्रिज) का निर्माण जल्द शुरू होगा। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने बुधवार को निवास कार्यालय पर आरओबी निर्माण से जुड़े विभागीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि आरओबी निर्माण के लिये भू-अर्जन की कार्रवाई तुरंत शुरू की जाये।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने इस आरओबी निर्माण से नर्मदापुरम रोड पर यातायात बेहतर होगा। इस क्षेत्र से गुजरने वाले यात्रियों को सुगमता होगी। उन्होंने कहा कि भोपाल विकास प्राधिकरण, नगर निगम, टाउन एण्ड कंट्री प्लानिंग और लोक निर्माण विभाग सहित निर्माण कार्यों से जुड़े सभी संबंधित अधिकारियों की संयुक्त बैठक कर आरओबी निर्माण की जिम्मेदारी से अवगत कराये जाये। बैठक में एडीएम श्री सिद्धात जैन, एसडीएम श्री रवि शंकर राय और संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे। आरओबी के संबंध दी गई जानकारी में बताया गया कि 733 मीटर लंबे आरओबी और 310 मीटर के एप्रोच रोड का निर्माण होगा। आरओबी के निर्माण हो जाने से नर्मदापुरम रोड पर ट्रैफिक का दबाब कम होगा और यातायात सुगम होगा।

मंत्री सुश्री भूरिया से मिली सोलो महिला साइक्लिस्ट आशा मालवीय

भोपाल एजेंसी। महिला-बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया से गुरुवार को भोपाल में उनके निवास पर राष्ट्रीय खिलाड़ी और सोलो साइक्लिस्ट जिला राजगढ़ की कु. आशा मालवीय ने सौजन्य भेंट की। कु. आशा ने बताया कि वे सम्पूर्ण भारत में 26 हजार किलोमीटर की यात्रा करने वाली एकल महिला साइक्लिस्ट हैं। उनका उद्देश्य महिला सुरक्षा और महिला सशक्तिकरण है। उन्होंने बताया कि कारगिल विजय दिवस की रजत जयंती पर उन्होंने कन्याकुमारी-कारगिल-सियाचिन-दिल्ली यात्रा कर शहीदों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। कु. आशा ने बताया कि वे

दुनिया के सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित मोटरेबल रोड से होकर भोपाल पहुँची हैं। अब तक उन्होंने इस यात्रा में 17 हजार 200 किलोमीटर की दूरी तय कर ली है। पिछले 2 वर्षों में कु. आशा मालवीय ने लगभग 43 हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा की है।

मंत्री सुश्री भूरिया ने कु. आशा को बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि महिलाएँ हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम करने में कामयाब हो रही हैं। उन्होंने कहा कि कु. आशा के हौसले ने उन्हें इस मुकाम पर पहुँचाया है और वे अन्य बच्चियों के लिये एक प्रेरणा हैं।

आयुष मंत्री की अध्यक्षता में हुई पुरस्कार चयन समिति की बैठक

भोपाल एजेंसी। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में गुरुवार को मंत्रालय में आयुष विभाग अंतर्गत पुरस्कार चयन समिति की बैठक हुई।

बैठक में पंडित उद्धवदास मेहता वैद्यशास्त्री आयुर्वेद सेवा सम्मान पुरस्कार वर्ष-2023 के लिए पुरस्कार चयन समिति ने व्यापक विचार मंथन किया। बैठक में सर्वसम्मति से वर्ष-2023 के उक्त पुरस्कार के लिए नाम का चयन किया गया।

आयुष मंत्री श्री परमार ने वर्ष-2022 एवं वर्ष-2023 के पंडित उद्धवदास मेहता वैद्यशास्त्री आयुर्वेद सेवा सम्मान पुरस्कार, समारोहपूर्वक शीघ्र प्रदान किए जाने के निर्देश दिए। मंत्री श्री परमार ने पुरस्कार वर्ष-2024 के लिए शीघ्र विज्ञापन जारी करने के निर्देश भी दिए। ज्ञातव्य है कि पूर्व बैठक में सर्वसम्मति से वर्ष-2022 के उक्त पुरस्कार के लिए नाम का चयन किया जा चुका है।

सभी सेक्टर को एक साथ जोड़ने का माध्यम सहकारिता-सहकारिता मंत्री सारंग

भोपाल एजेंसी। सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि किसी भी देश के उन्नयन, विकास और जनता के कल्याण के लिये अर्थ-व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि जहाँ व्यक्ति है, वहाँ अर्थ है और जहाँ अर्थ है वहाँ अर्थ-व्यवस्था। विकसित भारत निर्माण की परिकल्पना के लिये अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये संकल्प के साथ प्लानिंग करनी होगी। सभी अर्थ-व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिये लक्ष्य के साथ अपने-अपने प्रकल्प पर काम कर रहे हैं। सभी सेक्टर को एक साथ जोड़ने का माध्यम सहकारिता है। मंत्री श्री सारंग गुरूवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में राज्य ऋण संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि ऋण देना और समय पर वापस लेना अर्थ-व्यवस्था का महत्वपूर्ण आयाम है। उन्होंने कहा कि एक जैसे सेक्टर के लोग लगातार संवाद करें। समन्वय और परिस्थिति को जांचते हर तीन माह में एक-दूसरे की अपेक्षाओं पर काम करने से और अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

मंत्री सारंग ने कहा कि सहकारिता का महत्वपूर्ण स्तम्भ संस्कार है। पारदर्शिता और कम्प्यूटराइजेशन के साथ अर्थ-व्यवस्था और रोजगार के अवसर सृजित करने के लिये सुधार आवश्यक है। सहकारिता आन्?दोलन को मजबूत करने के लिये मध्यप्रदेश की हर पंचायत पर पैक्स स्थापित किये जायेंगे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि आकांक्षी ब्लॉक में सहकारी आन्?दोलन के माध्यम से नये रोजगार के अवसर सृजित कर उनके सामाजिक आर्थिक विकास के लिये काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नवाचार विंग के माध्यम से नित नये आयाम के द्वार खोले जा रहे हैं।

प्रदेश में समितियों का फेडरेशन बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि कॉर्पोरेट कल्चर को अपना कर बौद्धिक कुशलता और रोजमर्रा की कार्यप्रणाली पर काम किया जा रहा है। अर्थ-व्यवस्था के निर्माण और विकास के लिये मध्यप्रदेश दृढ़ संकल्पित है। देश को तीसरे नंबर की इकॉनोमी वाला बनाने के लिये मध्यप्रदेश जिम्मेदारी के साथ काम कर रहा है।

मंत्री सारंग ने राज्य फोकस पेपर 2025-26 पुस्तिका और सफल नवाचार की कहानियों पर आधारित नैब-पहलें का विमोचन किया। संगोष्ठी में सहकारी संस्थाओं को नाबार्ड की योजनाओं के अंतर्गत स्वीकृति-पत्र वितरण और राज्य में सराहनीय प्रदर्शन करने वाले हितग्राहियों का विशेष सम्मान किया गया।

संगोष्ठी को आरबीआई की क्षेत्रीय निदेशक सुश्री रेखा चन्दनवेली, एसबीआई के मुख्य महाप्रबंधक चन्द्रशेखर शर्मा और नाबार्ड की मुख्य महाप्रबंधक सुश्री सी. सरस्वती ने भी विचार व्यक्त किये।

इस मौके पर सहकारिता आयुक्त मनोज पुष्प, एस.एल.बी.सी. के डीजीएम प्रमोद मिश्रा उपस्थित थे। संगोष्ठी में राज्य फोकस पेपर 2025-26 पर प्रस्तुतिकरण दिया गया।

नगरीय क्षेत्रों में सेप्टिक टैंकों की सफाई का कार्य मशीनीकृत

भोपाल एजेंसी। मध्यप्रदेश कम लागत पर सीवेट ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) के लिये इंसेप्शन एण्ड डायवर्सन आधारित सीवरेज उपचार प्रणाली के लिये मॉडल रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल और दिशा-निर्देश तैयार करने वाला पहला राज्?य है। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने प्रदेश के नगरीय निकायों के लिये उपयोगिता जल और सेप्टेज प्रबंधन नीति प्रकाशित की है। इस नीति के माध्यम से प्रदेश में सीवर और सेप्टिक टेंकों की सफाई का कार्य मशीनीकृत तरीके से सुनिश्चित किया जा रहा है।

नगरीय क्षेत्रों में करीब 7100 से अधिक मोटराइज्ड वाहनों से 100 प्रतिशत कचरा संग्रहण व्यवस्था का संचालन किया जा रहा है। जिनमें सूखे, गीले, घरेलू, हानिकारक एवं सेनेटरी अपशिष्ट को अलग-अलग रखने के कंपार्टमेंट बनाये गये हैं। जिनमें जीपीएस और पीए सिस्टम से वाहनों की निगरानी एवं स्वच्छता विषयों व संदेशों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। गीले कचरे के प्र-संस्करण और निष्पादन के लिये होम अथवा स्पॉट कम्पोस्टिंग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश में 850 से अधिक थोक अपशिष्ट उत्पादकों द्वारा स्पॉट कंपोस्टिंग की जा रही है। प्रदेश में फीकल स्लज के निष्पादन को प्राथमिकता के साथ शामिल करते हुए 368 नगरीय निकायों में 399 एफएसटीपी और 20 निकायों में 55 एसटीपी संचालित हो रहे हैं।

प्रदेश में 401 नगरीय निकायों में 368 केन्द्रिकृत इकाइयों से कम्पोस्टिंग का कार्य कर रहे हैं। सूखे कचरे के प्र-संस्करण के लिये 401 नगरीय निकायों में 360 मटेरियल रिकवरी फेसलिटी इकाइयों का निर्माण किया गया है। राज्य के जिन नगर निगम क्षेत्रों में मेकेनिकल ट्रांसफर स्टेशन और प्र-संस्करण इकाइयों का निर्माण किया गया है, वहीं दूसरी ओर छोटे नगरीय निकायों में भी कंपोस्ट और प्र-संस्कृत अपशिष्ट के विक्रय से आय प्राप्त की जा रही है।

वैश्विक क्षमता केंद्रों के लिए भारत का उभरता शक्ति केंद्र बन रहा है मध्यप्रदेश

भोपाल एजेंसी। केंद्रीय बजट 2025 में निवेश, नवाचार और प्रतिभा विकास को आर्थिक वृद्धि के प्रमुख कारकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी दृष्टिकोण के अनुरूप, मध्यप्रदेश जीसीसी नीति 2025 वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसीएस) के लिए एक सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर रहा है।

सरकार टियर-2 शहरों में जीसीसीएस को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय ढांचा विकसित करेगी। मध्यप्रदेश पहले से ही इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जीसीसी नीति 2025 के तहत 50 से अधिक जीसीसीएस को आकर्षित करने, 37,000 से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां सृजित करने और राज्य के तेजी से बढ़ते आईटी/ आईटीईएस पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाने की योजना बनाई गई है।

बजट में निवेश, अर्थव्यवस्था और नवाचार को प्रमुख विकास चालक बताया गया है। जीसीसीनीति के तहत राज्य जीसीसी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए पेरोल सब्सिडी, इंटर्नशिप सहायता और अनुसंधान प्रोत्साहन उपलब्ध करा रहा है, जिससे वैश्विक उद्यमों को कुशल कार्यबल और अनुकूल व्यावसायिक माहौल मिल सके।

सरकार वैश्विक भागीदारी के साथ पांच उत्कृष्टता केंद्र (सीओईएस) स्थापित करेगी, जो उन्नत तकनीकों में कौशल विकास को बढ़ावा देंगे। मध्यप्रदेश पहले से ही इस दिशा में पहल कर चुका है और एआई व साइबर सुरक्षा में सीओईएस का समर्थन कर रहा है। 50 प्रतिशत परियोजना लागत सब्सिडी के साथ डीप-टेक अनुसंधान और कौशल विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई) में शिक्षा और अनुसंधान को नया स्वरूप देने के लिए 500 करोड़ रु. के ए आई उत्कृष्टता केंद्र की घोषणा की गई है। मध्यप्रदेश पहले से ही प्रति इकाई एक करोड रुपए के अनुसंधान एवं विकास (आर एडं डी) समर्थन तथा सीओई विकास के लिए 50 प्रतिशत सब्सिडी की व्यवस्था कर रहा है, जिससे एआई में अत्याधुनिक नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

निजी क्षेत्र के अनुसंधान और नवाचार को गति देने के लिए 20,000 करोड रु. के कोष की घोषणा की गई है। राज्य पेटेंट सहायता, आर एंड डी अनुदान और 30 करोड रु.तक की पूंजीगत (कैपेक्स) सब्सिडी प्रदान कर रहा है, जिससे मध्यप्रदेश वैश्विक अनुसंधान और नवाचार का एक प्रमुख केंद्र बन रहा है।

सरकार ने 50,000 अटल टिंकरिंग लैब्स के विस्तार का प्रावधान किया है, जिससे छात्रों में रचनात्मकता और तकनीकी कौशल को बढ़ावा मिलेगा। राज्य कौशल विकास केंद्रों को कौशल विकास और नवाचार केंद्र स्थापित करने के लिए प्रेरित कर रहा है, जिससे युवा प्रतिभाएं भविष्य के लिए तैयार हो सकें।

मध्यप्रदेश पहले से ही भारत की कौशल विकास केंद्र परिवर्तन यात्रा में अग्रणी है। सक्रिय नीतियों, रणनीतिक निवेश और नवाचार-प्रेरित दृष्टिकोण के साथ, राज्य भारत का अगला वैश्विक जी सी सी शक्ति केंद्र बनने के लिए तैयार है।

लोक निर्माण मंत्री के निर्देश पर मुख्य अभियंताओं के 7 दलों ने प्रदेश के सभी 7 परिक्षेत्रों में एक साथ किया औचक निरीक्षण

भोपाल एजेंसी। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह के निर्देश पर 5 फरवरी को लोक निर्माण विभाग के सातों परिक्षेत्रों के एक-एक जिले में मुख्य अभियंताओं के दलों ने औचक निरीक्षण किया। इन औचक निरीक्षणों की खास बात यह रही कि दो दिन पहले तक किसी को यह नहीं पता था कि कौन सा निरीक्षण दल किस जिले में किन निर्माण कार्यों का निरीक्षण करने वाला है।

औचक निरीक्षण के लिये सात जिलों का चयन रेंडम आधार पर किया गया, जिसमें भोपाल परिक्षेत्र से भोपाल, ग्वालियर परिक्षेत्र से ग्वालियर, जबलपुर परिक्षेत्र से कटनी, इंदौर परिक्षेत्र से धार, रीवा परिक्षेत्र से शहडोल, उज्जैन परिक्षेत्र से रतलाम एवं सागर परिक्षेत्र से पन्ना जिला शामिल था।

सभी सात जिलों में 5-5 निर्माण कार्यों को औचक निरीक्षण हेतु सॉफ्टवेयर के माध्यम से चिन्हित किया गया, जिनमें से तीन कार्य निर्माणाधीन स्तर पर थे एवं दो कार्य परफॉर्मेंस गारंटी वाले थे। इन 5 निर्माण कार्यों में से एक कार्य भवन निर्माण का था।

मंत्री श्री सिंह के निर्देश पर लोक निर्माण विभाग ने इन औचक निरीक्षणों के लिए एक विशेष सॉफ्टवेयर तैयार किया है। इस सॉफ्टवेयर से सबसे पहले रेंडम आधार पर मुख्य अभियंताओं के दल निर्मित किए गए और रेंडम आधार पर इन्हें एक-एक जिले का आवंटन किया गया। यह कार्यवाही दो दिन पहले की गई जिससे मुख्य अभियंताओं के दल अपनी यात्रा एवं परिवहन की तैयारी कर सकें। औचक निरीक्षण के एक दिन पहले इन दलों को रेंडम आधार पर चयनित पांच-पांच निर्माण कार्यों की सूची प्रदान की गई। सड़क निर्माण कार्यों में सामग्री के नमूने लेने के लिए रेंडम चैनेज भी सॉफ्टवेयर से ही जनरेट की गई।

प्रदेश के सात जिलो में चयनित 35 कार्यों में से 21 कार्य पी.डब्ल्यू.डी. सड़क एवं पुल के थे, 06 कार्य भवन निर्माण के थे, 6 कार्य म.प्र. सड़क विकास निगम, 01 कार्य म.प्र. भवन विकास निगम एवं 01 कार्य राष्ट्रीय राजमार्ग का शामिल किया गया।

मंत्री श्री सिंह के निर्देशानुसार सभी निरीक्षण दलों को उसी दिन अपनी निरीक्षण रिपोर्ट तैयार कर सीधे सॉफ्टवेयर पर अपलोड करनी है। इन रिपोर्ट्स की समीक्षा दूसरे दिन यानी 6 फरवरी 2025 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग पर की जाएगी। निरीक्षण के दौरान लिए गए सैंपल्स की लैब रिपोर्ट भी 3 दिन के अंदर प्राप्त कर सीधे सॉफ्टवेयर पर ही अपलोड की जाएगी।

बिजली विभाग के श्रमिक की मौत

परिजनों ने 12 घंटे तक विरोध-प्रदर्शन किया, 5 लाख मुआवजा और नौकरी का आश्वासन मिला

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली के कारकोटा क्षेत्र में 22 जनवरी को बिजली के खंभे पर काम कर रहे श्रमिक चंद्रिका पनिका की मौत के बाद परिजनों ने विरोध प्रदर्शन किया। आरोप है कि चंद्रिका ने बिजली शट डाउन करवाने का परमिट लिया था, लेकिन जूनियर इंजीनियर नागेश पांडे की लापरवाही से अचानक बिजली सप्लाई चालू कर दी गई, जिससे वह गंभीर रूप से झुलस गए।

गंभीर हालत में चंद्रिका को जबलपुर मेट्रो अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां 5 फरवरी की शाम 4 बजे उनकी मृत्यु हो गई। मृतक के परिजन जबलपुर से शव लेकर बैढ़न पहुंचे और रात 11 बजे बिजली विभाग कार्यालय के सामने प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शन आज सुबह 11 बजे तक चला। मौके पर पहुंचे विधायक रामनिवास शाह और वर्णन कोतवाली थाना प्रभारी अशोक सिंह परिहार ने परिजनों को समझाया।

कार्यपालन यंत्री (ग्रामीण) ओपी दुबे ने बताया कि कंपनी के नियमानुसार मृतक के परिवार को 5 लाख रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी। साथ ही मृतक के वेतन का 70 प्रतिशत पेंशन और परिवार के एक सदस्य को अस्थाई नौकरी भी दी जाएगी। बैढन थाना प्रभारी ने बताया कि मामले की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और जांच में दोषी पाए जाने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

3000 रुपए के लेनदेन में खूनी संघर्ष

दो लोगों ने युवक को लोहे की रॉड से पीटा, सिर में गंभीर चोट, अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में पुराने पैसों के लेनदेन को लेकर एक युवक पर जानलेवा हमला किया गया। बहरी थाना क्षेत्र के ग्राम अमरपुर में गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे यह घटना हुई। पीड़ित शिव बहादुर केवट को गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घटना के अनुसार, शिव बहादुर केवट जब अपने घर से सामान लेने जा रहे थे, तब रास्ते में सचिन केवट और बड़कवा केवट ने उन्हें रोक लिया। दोनों आरोपियों ने 3000 रुपए के पुराने लेनदेन को लेकर विवाद किया और लोहे की रॉड से शिव बहादुर पर हमला कर दिया। हमले में उनके सिर और सीने में गंभीर चोटें आईं। आरोपियों ने उन्हें मरणासन्न अवस्था में सड़क किनारे छोड़ दिया, जहां से राहगीरों की मदद से 108 एंबुलेंस द्वारा उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया।

पीड़ित ने बताया कि तीन साल पहले उन्होंने सचिन केवट से 3000 रुपए उधार लिए थे, जिसे वे धीरे-धीरे चुका रहे थे। घटना के बाद जब उन्हें होश आया, तो उन्होंने बहरी थाने में शिकायत दर्ज कराई। थाना प्रभारी राकेश बैस ने बताया कि शिव बहादुर की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है।

जिला पंचायत पन्ना में नए सीईओ की नियुक्ति

उमराव सिंह मरावी ने संभाला कार्यभार, बोले- निर्माण कार्य पारदर्शिता से कराएंगे

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना जिला पंचायत में गुरुवार को नए मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) उमराव सिंह मरावी ने पदभार ग्रहण किया। मुख्य सचिव कार्यालय से स्थानांतरित होकर आए मरावी ने पिछले सीईओ संघ प्रिय का स्थान लिया, जिन्होंने लगभग दो साल तक यहां सेवाएं दी थीं।

कार्यभार ग्रहण के अवसर पर अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी अशोक चतुर्वेदी, संजय सिंह परिहार सहित जिला पंचायत के अन्य अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। नए सीईओ का सभी ने औपचारिक स्वागत किया।

पदभार संभालने के बाद मरावी ने अपनी प्राथमिकताएं स्पष्ट करते हुए कहा कि जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायतों के माध्यम से विकास और निर्माण कार्य पूरी पारदर्शिता के साथ कराए जाएंगे। उन्होंने कड़े तेवर दिखाते हुए चेतावनी दी कि लापरवाह अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बुढ़ार में रेत से भरा ट्रैक्टर जब्त, चालक गिरफ्तार

वाहन मालिक फरार, खनिज अधिनियम के तहत केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। बुढ़ार थाना क्षेत्र में अवैध रेत परिवहन का एक और मामला सामने आया है। गुरुवार को पुलिस ने रुंगटा चौराहे से रेत से भरे एक ट्रैक्टर को जब्त कर लिया है। ट्रैक्टर चालक अर्जुन केवट को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि वाहन मालिक मोहम्मद महफूज अली फरार है।

जब्त किए गए ट्रैक्टर का नंबर एमपी 65 जेड ए 1766 है। पुलिस ने चालक और मालिक के खिलाफ खनिज अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी संजय जायसवाल के अनुसार मालिक की तलाश जारी है।

यह जिले में रेत चोरी का लगातार सामने आ रहा मामला है। एक दिन पहले भी ब्यौहारी पुलिस ने हिरवार पंचायत भवन के पास से एक रेत से लदा ट्रैक्टर जब्त किया था। हालांकि पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है, लेकिन खनिज विभाग की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। इस कारण स्थानीय लोगों ने खनिज विभाग की भूमिका पर सवाल उठाए हैं।

रेत के अवैध खनन और परिवहन पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस प्रशासन सक्रिय है, लेकिन खनिज विभाग की निष्क्रियता के कारण इस अवैध कारोबार पर पूर्ण रूप से रोक नहीं लग पा रही है। रेत का खनन किस स्थान से हो रहा है, यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है।

यातायात पुलिस ने एक दर्जन से ज्यादा ई-रिक्शा जब्त किए

डाक्यूमेंट्स होने पर भी नहीं छोड़े वाहन : रिक्शा चालक

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में यातायात पुलिस ने गुरुवार को एक दर्जन से ज्यादा ई-रिक्शा जब्त किए हैं। यातायात पुलिस की ओर से 'रोको-टोको अभियान' के तहत शहर में कार्रवाई की जा रही है, जिसमें शराब पीकर वाहन चलाने वालो और तेज रफ्तार वाहनों पर कार्रवाई करने का फोकस है। इसी दौरान ई-रिक्शा जब्त किए गए।

पुलिस ने रिक्शा चालकों का दोपहर 2 बजे तक न तो चालान काटा गया और न ही वाहन छोड़े। इस दौरान कुछ रिक्शा चालकों ने बिना किसी कारण के परेशान करने के आरोप लगाए है।

रिक्शा ड्राइवर्स का आरोप: एक रिक्शा चालक रवि विश्वकर्मा ने बताया कि उन्होंने 300 रुपए प्रतिदिन के किराए पर रिक्शा लिया है। सुबह से रिक्शा जब्त होने के कारण वे किराया भी नहीं कमा पाया हैं। एक अन्य चालक मनोज साहू ने बताया कि सुबह 9 बजे से उनका वाहन जब्त है, जबकि उनके पास सभी आवश्यक कागजात मौजूद हैं। वह अपने परिवार का भरण-पोषण ई-रिक्शा चलाकर करते हैं।

यातायात थाना प्रभारी का कहना है कि जिन रिक्शा चालकों के पास वैध कागजात नहीं हैं, उन पर कार्रवाई की जा रही है और जिनके कागजात अधूरे हैं, उन्हें पूरा करने की सलाह दी जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि वैध कागजात वाले चालकों को परेशान नहीं किया जाएगा।

रात 1 बजे ऑटो चालक ने महिला का मोबाइल छीना, रेलवे स्टेशन से घर जा रही थी, आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल में एक महिला के साथ ऑटो में लूट की घटना सामने आई है। कोतवाली थाना क्षेत्र में हुई इस वारदात में एक ऑटो चालक ने अकेली महिला यात्री का मोबाइल छीन लिया।

घटना बीती बुधवार रात करीब 1 बजे की है, जब 28 वर्षीय महिला हमसफर ट्रेन से शहडोल रेलवे स्टेशन पहुंची। रीवा होटल के पास स्थित अपने घर जाने के लिए उसने एक ऑटो किराए पर लिया। लेकिन ऑटो चालक ने सही रास्ते पर जाने के बजाय गाड़ी को सिंहपुर रोड की तरफ मोड़ दिया। महिला के विरोध करने पर भी आरोपी नहीं माना। सुनसान सड़क पर ऑटो रोककर उसने महिला के साथ लूट की।

पीड़िता ने किसी तरह अपने पति को घटना की सूचना दी। दंपती ने तुरंत कोतवाली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी जानकारी के आधार पर आरोपी ऑटो चालक ओमप्रकाश बर्मन को चंद घंटों में ही गिरफ्तार कर लिया। पीड़ित ने आरोपी की शिनाख्त कर ली है। पुलिस अब मामले की आगे की जांच कर रही है।

कोतवाली थाना प्रभारी रावेंद्र तिवारी ने बताया कि महिला का मोबाइल आरोपी के कब्जे से बरामद कर लिया गया है।

आवास सर्वे में लापरवाही करने वालों को नोटिस

सिर्फ 6 हितग्राहियों का सर्वे करने वाले रोजगार सहायक का वेतन रोका

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा ने गुरुवार को जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ के ग्राम पंचायत करौंदा टोला का निरीक्षण किया। इस दौरान ग्राम पंचायत के रोजगार सहायक एवं प्रभारी सचिव गजेंद्र अहिरवार ने 17 जनवरी से शुरू हुए सर्वे में अब तक केवल 6 हितग्राहियों का ही सर्वे किया है।

केंद्र और राज्य सरकार के निर्देशों के अनुसार, वर्तमान में ग्राम पंचायतों में घर-घर जाकर पात्र हितग्राहियों को आवास स्वीकृत करने के लिए सर्वे किया जा रहा है। सर्वे कार्य में गंभीर लापरवाही पाए जाने पर सीईओ ने कड़ी कार्रवाई करते हुए अहिरवार के आगामी माह के वेतन भुगतान पर रोक लगा दी है। साथ ही उन्हें पद से पृथक करने का नोटिस भी जारी किया गया है।

इस मामले में ग्राम पंचायत के सरपंच को भी धारा 40 के तहत नोटिस जारी किया गया है। जिला पंचायत सीईओ ने कर्मचारी द्वारा पदीय दायित्वों के निर्वहन में उदासीनता और लापरवाही बरतने को गंभीरता से लिया है।

रेत माफिया पर कार्रवाई, बिना दस्तावेज रेत ले जा रहे दो ट्रैक्टर जब्त, चालकों पर केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। चुरहट में पुलिस ने अलग-अलग स्थानों से बिना वैध दस्तावेजों के रेत ले जा रहे दो ट्रैक्टर पकड़े।

पहला ट्रैक्टर (एमपी53एए4485) बरिगवा मोड़ पुलिया के पास से पकड़ा गया, जिसका चालक रमेश यादव (38) रेत खाली कर फरार होने की फिराक में था।

वहीं दूसरा ट्रैक्टर (एमपी53एए3438) बरिगवा मोड़ मेन रोड से पकड़ा गया, जिसे राजेश प्रसाद द्विवेदी (46) चला रहा था। दोनों चालक भेलकी क्षेत्र के हैं और जांच के दौरान कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके।

पुलिस ने दोनों मामलों में खान एवं खनिज अधिनियम की धाराओं में केस दर्ज किया है। थाना प्रभारी अतर सिंह ने बताया कि क्षेत्र में अवैध खनन और रेत परिवहन को रोकने के लिए कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि इस तरह की कार्रवाई से अवैध गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित होगा।

छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता के लंबित आवेदन 15 तक दर्ज कराएं : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के लंबित छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता के आवेदन 15 फरवरी तक दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने सभी शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयों के प्राचार्य और नोडल अधिकारियों को इस संबंध में निर्देशित किया है। कलेक्टर ने कहा है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्रों के वर्ष 2021-22, 2022-23 एवं 2023-24 के छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता के ऑनलाइन आवेदन के लिए एमपी टॉस पोर्टल 31 जनवरी 2025 तक खोला गया था, जिसे आगामी 15 फरवरी तक के लिए पुनरू खोलकर अंतिम अवसर दिया गया है। जिन विद्यार्थियों के ऑनलाइन आवेदन छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता के लिए लंबित हैं उनके आवेदन निर्धारित अवधि तक पोर्टल में अनिवार्य रूप से दर्ज कराएं। इसके साथ ही वर्ष 2024-25 के नवीनीकरण व नवीन छात्रों के आवेदन कराकर नोडल अधिकारी के माध्यम से सत्यापित कराना सुनिश्चित करें।

रिश्वत लेते पुलिसकर्मी को किया लाइन अटैच

छतरपुर में बोरवेल मशीन चालक से वसूले 1 हजार रुपए, एसपी की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में यातायात पुलिसकर्मी ने एक बोरवेल मशीन चालक से 1 हजार रुपए की अवैध वसूली की। सोमवार देर रात यातायात थाने में पदस्थ पुलिसकर्मी रामसजीवन राजपूत सागर-कानपुर नेशनल हाईवे पर तैनात थे। इस पूरी घटना का वीडियो एक राहगीर ने बना लिया, जो बाद में सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

रामसजीवन पहले बोरवेल मशीन को यातायात थाने ले गया। यातायात प्रभारी बृहस्पति साकेत के निर्देश पर गाड़ी को छोड़ दिया गया। लेकिन जैसे ही गाड़ी थाने से बाहर निकली, आरोपी पुलिसकर्मी दोबारा गाड़ी में बैठ गया। एक राहगीर ने इस संदिग्ध गतिविधि को देखकर गाड़ी का पीछा किया और सागर रोड बगौता तिराहे के पास पुलिसकर्मी को रिश्वत लेते हुए वीडियो में कैद कर लिया।

एसपी ने लाइन अटैच किया: एसपी आगम जैन ने वीडियो की जांच के बाद रामसजीवन राजपूत को लाइन अटैच कर दिया है। यातायात प्रभारी बृहस्पति साकेत ने स्पष्ट किया कि डोमेस्टिक सप्लाई, दूध टैंकर, डीजल-पेट्रोल टैंकर, गैस सिलेंडर और बोरिंग मशीन पर नो एंट्री का नियम लागू नहीं होता है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी एक यातायात पुलिसकर्मी सुरेंद्र जाटव को इसी तरह के मामले में लाइन अटैच किया गया था।

कलेक्टर ने नदारद मिले डॉक्टर्स को नोटिस जारी किए

छतरपुर जिला अस्पताल में मरीजों से की बातचीत, तहसील में रिकॉर्ड नहीं मिला

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर कलेक्टर पार्थ जैसवाल ने गुरुवार को जिला अस्पताल, तहसील परिसर और पोस्ट ऑफिस स्थित आधार कार्ड सेंटर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिला अस्पताल की ओपीडी में तीन चिकित्सक अनुपस्थित मिले, जिन्हें नोटिस जारी करने के निर्देश सिविल सर्जन डॉ. जीएल अहिरवार को दिए गए।

कलेक्टर ने अस्पताल के विभिन्न वार्डों का दौरा कर मरीजों से बातचीत की और स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने सिविल सर्जन को वार्डों में पाई गई कमियों को तुरंत दूर करने और मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के निर्देश दिए।

पुराने रिकॉर्ड को जिला रिकॉर्ड रूम में जमा करने के निर्देश: तहसील परिसर के निरीक्षण में कलेक्टर ने एसडीएम, तहसीलदार और नायब तहसीलदार के कोर्ट रूम का जायजा लिया। उन्होंने पुराने रिकॉर्ड को तीन दिन के भीतर जिला रिकॉर्ड रूम में जमा करने के आदेश दिए और चेतावनी दी कि ऐसा न करने पर संबंधित रीडर के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

वकीलों और आम नागरिकों की समस्याएं सुनी: राजस्व प्रकरणों के निपटारे को लेकर कलेक्टर ने नामांतरण और फौती नामांतरण जैसे मामलों को समयबद्ध तरीके से निपटाने के निर्देश दिए। मातगुवां नायब तहसीलदार कोर्ट में बैठकर उन्होंने पुराने प्रकरणों की समीक्षा की और त्वरित निराकरण के आदेश दिए। इस दौरान वकीलों और आम नागरिकों की समस्याएं भी सुनी।आधार कार्ड सेंटर पर भी निरीक्षण किया गया, जहां कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आम जनता को आधार कार्ड से संबंधित सेवाओं में किसी प्रकार की परेशानी न हो।

आधार नामांकन हेतु वैध दस्तावेजों को पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। तहसीलदार तहसील गोपद बनास द्वारा सभी आवेदनकर्ता एवं आधार केंद्रों को जरिये सूचना सूचित किया गया है कि 5 वर्ष के ऊपर एवं 18 वर्ष के ऊपर उम्र के आवेदकों के आधार नामांकन के लिये पहचान प्रमाण पत्र, निवास का प्रमाण, नामांकन जिसके नाम किया जावे के संबंध रखने वाले का प्रमाणित दस्तावेज एवं जन्म तिथि को प्रमाणित करने के लिए आवश्यक वैध दस्तावेज लिया जाकर अपलोड आवश्यक रूप से किया जावे।

उन्होंने बताया कि तहसील गोपद बनास अंतर्गत आधार केंद्रों के माध्यम से 5 वर्ष के ऊपर उम्र के बच्चों एवं 18 वर्ष के ऊपर उम्र के आवेदकों के आधार नामांकन हेतु आवेदन आधार पोर्टल पर किये जा रहे है। प्रायः देखने में आया है कि आधार नामांकन के लिए विधिक एवं आवश्यक दस्तावेज नहीं लिये जा रहे है। उक्त आधार नामांकन फार्म सत्यापन के लिए तहसीलदार गोपद बनास की आई.डी. में प्राप्त होते हैं। आवश्यक दस्तावेज पोर्टल पर अपलोड नहीं होने से सत्यापन में विलंबता होती है।

उन्होंने तहसील गोपद बनास क्षेत्रान्तर्गत समस्त पटवारी को निर्देशित किया है कि आधार सत्यापन के दौरान समस्त वैध दस्तावेज प्राप्त कर परीक्षण करेगे तथा परीक्षण करते हुए नामांकन के लिए प्राप्त आवेदनो पर सत्यापन की रिपोर्ट कार्यालय तहसीलदार तहसील गोपद बनास जिला सीधी में समय-सीमा के भीतर वैध एवं आवश्यक दस्तावेजो के साथ अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करना सुनिश्चित करेंगे। दर्ज आधार नामांकन फार्मों के आवश्यक विधिक दस्तावेज न होने पर दर्ज आवेदन को अस्वीकृत कर दिये जावेगें।

संपादकीय

मन की शक्ति

मन को जीवन का केंद्रबिंदु कहना असंभव नहीं है। मनुष्य की क्रियाओं, आचरणों का प्रारंभ मन से ही होता है। मन तरह-तरह के संकल्प, कल्पनाएं करता है। जिस ओर उसका रुझान हो जाता है उसी ओर मनुष्य की सारी गतिविधियां चल पड़ती है। जैसी कल्पना हो उसी के अनुरूप प्रयास-पुरुषार्थ एवं उसी के अनुसार फल सामने आने लगते हैं। मन जिधर रस लेने लगे उसमें लौकिक लाभ या हानि का बहुत महत्व नहीं रह जाता। प्रिय लगने वाले के लिए सब कुछ खो देने और बड़े से बड़े कष्ट सहने को भी मनुष्य सहज ही तैयार हो जाता है। मन यदि अच्छी दिशा में मुड़ जाए; आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास में रुचि लेने लगे तो जीवन में एक चमत्कार हो सकता है। सामान्य श्रेणी का मनुष्य भी महापुरुषों की श्रेणी में आसानी से पहुंच सकता है। सारी कठिनाई मन को अनुपयुक्त दिशा से उपयुक्त दिशा में मोड़ने की ही है। इस समस्या के हल होने पर मनुष्य सच्चे अर्थ में मनुष्य बनता हुआ देवत्व के लक्ष्य तक सुविधापूर्वक पहुंच सकता है।

शरीर के प्रति कर्तव्य पालन करने की तरह मन के प्रति भी हमें अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना चाहिए। कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है, अपनी सभी विशेषता और श्रेष्ठताओं को खो देता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता का अनुभव करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। मन को सही दिशा देते रहने के लिए स्वाध्याय की वैसी ही आवश्यकता है जैसे शरीर को भोजन देने की। आत्मनिर्माण करने वाली जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। यदि सुलझे हुए विचारों के जीवन विद्या के ज्ञाता कोई संभ्रांत सज्जन उपलब्ध हो सकते हों तो उनका सत्संग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मन का स्वभाव बालक जैसा होता है, उमंग से भरकर वह कुछ न कुछ करना-बोलना चाहता है। यदि दिशा न दी जाए तो उसकी क्रियाशीलता तोड़-फोड़ एवं गाली-गलौज के रूप में भी सामने आ सकती है। मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे तो कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों, सद्भावों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होनी ही चाहिए।

मोहन के जापान दौरे से मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास को मिलेगी नई दिशा

मध्यप्रदेश के मुयमंत्री डॉ. मोहन यादव की जापान यात्रा ने न केवल जापान की औद्योगिक प्रगति और विकास को करीब से समझने का अवसर प्रदान किया बल्कि वहाँ के लोगों की जीवनशैली, संस्कृति, तकनीकी विकास को भी करीब से देखा। जापान सरकार और प्रवासी भारतीयों द्वारा डॉ. यादव का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। जापान में उनकी यात्रा का उद्देश्य एमपी और जापान के सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना रहा। जब वह टोयो पहुंचे तो उनका वहाँ स्थानीय प्रशासन द्वारा स्वागत किया गया। मुयमंत्री डॉ. यादव जापान दौरे के पहले दिन टोयो में विभिन्न महत्वपूर्ण बैठकों और कार्यक्रमों में शामिल हुए। टोयो में जापान के निवेशकों और औद्योगिक संस्थानों के प्रमुखों के साथ मध्यप्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों के बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों और संभावनाओं के विषयों पर चर्चा की। इस दौरान मुयमंत्री डॉ. यादव फ्रेंड्स ऑफ एमपी-जापान टीम के साथ भेंट करने के साथ ही टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ औद्योगिक और निवेश सहयोग के विषय पर बैठक की जिसके बाद टोयो स्थित भारतीय दूतावास में सेलिब्रेटिंग इंडिया-जापान रिलेशनशिप : फोकस मध्यप्रदेश रोड-शो में भी सहभागिता की।

जापान के तकनीकी विकास से डॉ. मोहन यादव को काफी प्रभावित किया। उन्होंने देखा कि कैसे जापान अपने अत्याधुनिक तकनीकी अविष्कारों और इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। वहाँ की रेल प्रणाली ने उन्हें खासा प्रभावित किया। उन्होंने बुलेट ट्रेन की सवारी की और महसूस किया कि कैसे यह तकनीकी दृष्टि से दुनिया के सबसे तेज और सुरक्षित परिवहन साधनों में से एक है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान एक्सटर्नल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन के साथ टोक्यो के मिनाटो-कू में विस्तृत चर्चा की जिसमें जापानी कंपनियों के मध्यप्रदेश में निवेश को लेकर संभावनाओं और सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। जेट्रो ने मध्यप्रदेश सरकार के साथ बड़े निवेश पर चर्चा की। डॉ. मोहन यादव ने जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी को मध्यप्रदेश में हाइड्रो प्रोजेक्ट में निवेश करने के लिये आमंत्रित किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सा उपकरणों का उत्पादन करने वाली कंपनी एएनडीडी मेडिकल के निदेशक डाइकी अराई ने मध्य प्रदेश में निर्माण इकाई स्थापित करने की मंशा जाहिर की।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टोक्यो में एएनडी मेडिकल कम्पनी के निदेशक डाइकी अराई से मुलाकात कर मध्यप्रदेश में चिकित्सा उपकरण निर्माण के अवसरों पर विस्तृत चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन के अत्याधुनिक मेडिकल डिवाइस पार्क में निवेश के लिये आमंत्रित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश सरकार औद्योगिक इकाइयों को रियायती दरों पर भूमि उपलब्ध करा रही है। उन्होंने इस पार्क को भारत के तेजी से विकसित हो रहे हेल्थ केयर और मेडिकल डिवाइस सेक्टर का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बताया। उज्जैन में बन रहे मेडिकल डिवाइस और मुख्य रूप से मेडिकल सेक्टर के लिए भी जापान के उद्योगपतियों से निवेश की बात कही है। सीएम डॉ. यादव के प्रयासों से मध्य प्रदेश में मेडिकल और फार्मास्यूटिकल मैन्युफैक्चरिंग का नया हब बनने जा रहा है जिसके लिए जापान से निवेशकों के बड़े प्रस्ताव भी मिले हैं। उन्होंने सिस्मेक्स की अत्याधुनिक मेडिकल डिवाइस निर्माण तकनीक का अवलोकन किया और मध्यप्रदेश में सिस्मेक्स को आमंत्रित किया।

एएंडडी मेडिकल ने मध्यप्रदेश में अपनी निर्माण इकाई स्थापित करने में विशेष रूचि दिखाते हुए इसे वर्ष के अंत तक इसे शुरू करने की बात कही है। जापान की एएंडडी मेडिकल कम्पनी वैश्विक स्तर पर चिकित्सा उपकरण और स्वास्थ्य निगरानी उत्पादों का उत्पादन करती है। डॉ. मोहन यादव ने कोबे और ओसाका में स्थित हेल्थ केयर और डॉयग्नोस्टिक कम्पनी साइसमेक्स प्रमुख औद्योगिक कम्पनियों के उद्योगपतियों के साथ बैठक की और हेल्थ केयर, ऊर्जा और मैन्युफेक्करिंग क्षेत्रों में निवेश एवं साझेदारी पर भी चर्चा की। उन्होंने जापानी कार निर्माता कंपनी 'टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन के वरिष्ठ अधिकारियों से भी मुलाकात कर उनसे मध्य प्रदेश में निवेश की संभावनाओं पर चर्चा की।पैनासोनिक एनर्जी कपंनी लिमिटेड, डॉयग्नोस्टिक कंपनी साइसमेक्स सहित कई औद्योगिक कंपनियों ने बैटरी निर्माण और प्रदेश में ऊर्जा भंडारण के क्षेत्र में गहरी रूचि दिखाई और एमपी में भरपूर निवेश का भरोसा दिलाया। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने अपने जापान दौरे में प्रवासी भारतीयों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आपने जो नींव तैयार की है उसका फायदा भारत की आने वाली पीढ़ियों को मिलेगा।जापान की यात्रा डॉ.मोहन यादव के लिए एक अद्वितीय अनुभव है। जापान में डॉ. यादव की सादगी लोगों के दिल में उतर गई। डॉ. यादव ने अपने सोशल मीडिया में एक ऐसा वीडियो शेयर किया जो खूब वायरल हो रहा है जिसे देखकर लोग भावुक हो रहे हैं। इस वीडियो में उनके सहज, सरल और आकर्षक व्यक्तित्व की विलक्षण छाप देखने को मिल रही है। लोग जापानी अंदाज और भाषा में उन्हें विदाई दे रहे हैं। इम्पीरियल होटल से चेक-आउट करते समय होटल के सदस्यों ने बड़ी देर तक खड़े होकर उनके लिए तालियां बजाईं और तस्वीरें खिंचवाईं। लोग तब तक होटल के मुख्य द्वारा पर खड़े रहे, जब तक सीएम डॉ. यादव कार में नहीं बैठे।

मध्य प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 24-25 फरवरी 2025 को भोपाल में आयोजित होगा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इस दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के 15,000 से अधिक निवेशकों के शामिल होने की उम्मीद है। यह सम्मेलन उद्योगपतियों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केंद्र होगा। इस बार की समिट में जापान कंट्री पार्टनर होगा जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को मजबूती मिलेगी। जापानी निवेशकों के अलावा अन्य देशों के भी निवेशक इस समिट में भाग लेंगे। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित होगी। इस आयोजन से नए उद्योगों की स्थापना, रोजगार के अवसरों में वृद्धि और राज्य की औद्योगिक छवि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की उम्मीद है। कहा जा सकता है कि डॉ.मोहन यादव का जापान दौरा एमपी में जापानी कंपनियों के बीच निवेश को बढ़ावा देने में कारगर साबित हुआ है। उन्होंने अपनी चार दिन की जापान यात्रा में न केवल जापान के प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात की और निवेश और व्यापार के नए अवसरों को तराशा बल्कि जापानी समाज और संस्कृति को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। उन्होंने वहाँ की तकनीकी प्रगति, कला, संस्कृति और व्यापारिक दृष्टिकोण को अपनी यात्रा के अनुभवों में समाहित किया। यह यात्रा मध्यप्रदेश और जापान के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने में भी सहायक साबित हुई है।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

कबीर दास जी एक दोहे के माध्यम से कहते हैं मन के मत में न चलो, क्योंकि मन के अनेको मत हैं। जो मन को सदैव अपने अधीन रखता है, वह साधु कोई विरला ही होता है।मन के मारे बन गये, बन तजि बस्ती माहिं।कहैं कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरै नाहिं ।। इसका मतलब मन की चंचलता को रोकने के लिए वन में गये, वहाँ जब मन शांत नहीं हुआ तो फिर से बस्ती में आ गये। गुर कबीर जी कहते हैं कि जब तक मन शांत नहीं होगा, तब तक तुम क्या आत्म - कल्याण करोगे।मैं गरीब या अपने माता-पिता की सेवा करना चाहूंगाकारण यह सबसे अच्छी जरूरत है जो आप एक के लिए कर सकते हैं। इसके लिए हमें गरीबों की मदद करनी चाहिए और हमेशा माता-पिता द्वारा हमें दिए गए कार्यों पर ध्यान दें।स्वार्थ के मन में गंदगी रहती है तो आप उसे कर कर भी क्या करोगे आप उसके लिए अच्छे से बुरे कर्म करते हो बदले में धोखा मिलता हैमहाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर राजा बन गए थे। जब हस्तिनापुर में सब ठीक हो गया तो श्रीकृष्ण अपनी नगरी द्वारका लौट रहे थे। उस समय कुंती ने श्रीकृष्ण से वरदान में दुख मांगे थे। श्रीकृष्ण ने पूछा कि आप दुख क्यों मांग रही हैं?कुंती ने कहा कि दुख के दिनों में तुम बहुत याद आते हो। अगर सुख के दिन रहेंगे तो मैं तुम्हें याद नहीं कर पाऊंगी, लेकिन जब-जब मेरे जीवन में दुख आते हैं, तुम मुझे याद आते हो और तुम हमारी मदद करने के लिए आ जाते हैं। मैं चाहती हूं कि मेरे जीवन में दुख रहें, ताकि मैं तुम्हें हमेशा याद करूं और तुम भी हम पर कृपा बनाए रखो। अगर आपका रिश्ता ठीक नहीं है तो उसे ठीक करने की जगह हमेशा रखनी चाहिए। ये जरूरी नहीं कि समस्या बहुत बड़ी हो। आपको बदलाव का मौका खुद को भी देना चाहिए और पार्टनर को भी देना चाहिए। रिश्ते को सुलझाने के लिए छोटे-छोटे कदम उठाएं। ध्यान रखें कि अगर आपको आपकी भावनाओं की कद्र करवानी है तो पार्टनर की भावनाओं की कद्र भी करनी होगी।

राहुल गांधी की देश-विरोधी बचकानी राजनीति

ललित गर्ग

एक बार फिर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को नीचा दिखाने के इरादे से ऐसा बयान दिया है जो भारत की साख को आघात लगाने वाला है बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता को ध्वस्त करने वाला है। राहुल गांधी किस तरह गैर जिम्मेदाराना बयान देने में माहिर हो गए हैं, यह इस कथन से फिर सिद्ध हुआ कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर इसलिए बार-बार अमेरिका जा रहे थे, ताकि भारतीय प्रधानमंत्री को डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया जाए। राहुल गांधी मोदी-विरोध में कुछ भी बोले, यह राजनीति का हिस्सा हो सकता है, लेकिन वे मोदी विरोध के चलते देश-विरोध में जिस तरह के अनाप-शनाप दावे करते हुए गलत बयान देते हैं, वह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता एवं बचकानेपन को ही दर्शाता है। आखिर कब राहुल एक जिम्मेदार एवं विवेकवान प्रतिपक्ष के नेता बनेंगे?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से राजनीति से हटकर भी गहरे व्यक्तिगत आत्मीय मित्रवत संबंध है, इसलिये उनका शपथ ग्रहण समारोह में बुलाने पर किसी तरह का संदेह नहीं हो सकता। लेकिन इस बात को लेकर राहुल के बयान पर हैरानी होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि लोकसभा में संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने राहुल गांधी की इस विचित्र बात पर आपत्ति जताई, बल्कि विदेश मंत्री जयशंकर ने भी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि वह ऐसी बात कहकर भारत की छवि खराब करने का काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राहुल गांधी के झूठ का उद्देश्य राजनीतिक हो सकता है, लेकिन ऐसे झूठे, भ्रामक एवं गुमराह करने वाले बयान से भारत की छवि को गहरा नुकसान हुआ है। यह तय है कि विदेशी मंत्री के प्रतिवाद का राहुल गांधी की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है। ऐसी मिथ्या बातें करके वे प्रधानमंत्री पर हमला करने का कोई अवसर नहीं चुकते। वह प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी को कोई महत्व नहीं देते। आखिर यह किसी से छिपा नहीं कि वह उनके खिलाफ तू-तड़ाक वाली अशालीन एवं अमर्यादित भाषा का उपयोग करते रहे हैं। विडंबना यह है कि इस आदत का परित्याग वह नेता प्रतिपक्ष का पद हासिल करने के बाद भी नहीं कर पा रहे हैं। समस्या केवल यह नहीं कि वह प्रधानमंत्री पद की गरिमा की परवाह नहीं करते। समस्या यह भी है कि वह प्राय: ऐसी बचकानी बातें कर जाते हैं, जो राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल होती हैं या दूसरे देशों से संबंधों पर बुरा असर डालती हैं।

राहुल गांधी नेता प्रतिपक्ष हैं और उन्होंने अन्य सांसदों की ही तरह देश की अखंडता और एकता की रक्षा करने की शपथ ली थी, लेकिन उनके द्वारा समय-समय पर दिये गये वक्तव्य एवं टिप्पणियां पूरी तरह से राष्ट्र विरोधी है। ऐसा लगता है कि राहुल गांधी भारत विरोधी अलगाववादी समूह के नेता बनने की राह पर अग्रसर हैं और उनका इरादा भारत की एकता, अखंडता और सामाजिक सद्भाव को नष्ट करना और देश को गृहयुद्ध की ओर धकेलना है। इस तरह राहुल गांधी द्वारा देश में विभाजन के बीज बोने के प्रयास निंदनीय ही नहीं, घोर चिन्तनीय है। सत्ता के लालच में कांग्रेस एवं उनके नेता देश की अखंडता के साथ समझौता और आम आदमी के भरोसे को तोड़ने से बाज नहीं आ रहे हैं। राहुल के

बयानों से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी लड़ाई सिर्फ भाजपा और आरएसएस से नहीं, बल्कि भारत से है। राहुल गांधी अक्सर भारत राष्ट्र अर्थात भारत के संविधान यानी आंबेडकर के संविधान के खिलाफ विषवमन करते दिखाई देते हैं। गांधी परिवार की 'मुंह में राम और बगल में छुरी' वाली कहावत जनता के सामने बार-बार आती रही है। आंबेडकर के अस्तित्व को नकार कर भारत के संविधान को बदलने के बाद गांधी परिवार देश का विभाजन, दुश्मन देश के नेताओं एवं शक्तियों के सपनों का टुकड़ों वाला भारत चाहता है। आखिर राहुल गांधी और कांग्रेसी किस बात के लिए संविधान की प्रति लेकर चलते हैं? इस तरह एक गैर जिम्मेदार और बचकाने नेता का लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष होना क्या देश का दुर्भाग्य नहीं है? राहुल गांधी को गंभीर आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है।

राहुल गांधी अपने आधे-अधूरे, तथ्यहीन एवं विध्वंसात्मक बयानों को लेकर निरन्तर चर्चा में रहते हैं। उनके बयान हास्यास्पद होने के साथ उद्देश्यहीन एवं उच्छृंखल भी होते हैं। राहुल ने पहले भी बातों-बातों में यह कहा था कि चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया है। वह देश के प्रमुख विपक्षी दल के नेता हैं। सरकार की नीतियों से नाराज होना, सरकार के कदमों पर सवाल उठाना उनके लिए जरूरी है। राजनीतिक रूप से यह उनका कर्तव्य भी है।

लेकिन चीन के साथ उनकी सहानुभूति अनेक प्रश्नों को खड़ा करती है। ऐसे ही सवालों में आज तक इस सवाल का जवाब भी नहीं मिला कि आखिर राजीव गांधी फाउंडेशन को चीनी दूतावास से चंदा लेने की जरूरत क्यों पड़ी? वह यह नहीं बताते कि 2008 में अपनी बीजिंग यात्रा के दौरान सोनिया गांधी और उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी से समझौता क्यों किया था? इतना ही नहीं, जब राहुल गांधी राफेल विमान सौदे में कथित दलाली खोज लाए थे, तो यहां तक कह गए थे कि खुद फ्रांस के राष्ट्रपति ने उन्हें बताया था कि दोनों देशों में ऐसा कोई समझौता नहीं, जो राफेल विमान की कीमत बताने से रोकता हो। उनके इस झूठ का खंडन फ्रांस की सरकार को करना पड़ा था। डोकलाम विवाद के समय वह भारतीय विदेश मंत्रालय को सूचित किए बिना किस तरह चीनी राजदूत से मुलाकात करने चले गए थे। जब इस मुलाकात की बात सार्वजनिक हो गई तो उन्होंने यह विचित्र दावा किया कि वह वस्तुस्थिति जानने के लिए चीनी राजदूत से मिले थे। क्या इससे अधिक गैरजिम्मेदाराना हरकत और कोई हो सकती है? राहुल गांधी के गैरजिम्मेदाराना बयानों से यही पता चलता है कि उन्हें न तो प्रधानमंत्री की बातों पर यकीन है, न रक्षा मंत्री की और न ही विदेश मंत्री की। यह भी स्पष्ट है कि उन्हें शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर भी भरोसा नहीं। ध्यान रहे, वह सर्जिकल और एयर स्ट्राइक पर भी बतूके सवाल खड़े कर चुके हैं।

अरपा भैंसाझार में 3.42 करोड़ की अनियमितता

पहले जांच में एसडीएम सहित अफसर दोषी, अब केवल पटवारी पर थोपी जिम्मेदारी, हाईकोर्ट से भागा आरोपी आरआई

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में अरपा भैंसाझार परियोजना में एक ही खसरे का अलग-अलग रकबा दिखाकर मुआवजा बांटने में 3 करोड़ 42 लाख 17 हजार 920 रुपये की अनियमितता की गई। पहले जांच में कोटा के तत्कालीन एसडीएम आनंद रूप तिवारी, कीर्तिमान सिंह राठौर समेत अन्य अफसरों को दोषी पाया गया था, लेकिन किसी पर कार्रवाई नहीं की गई।

अब दोबारा जांच के बाद केवल पटवारी को दोषी बताया गया है। मंगलवार को इस मामले में केस दर्ज करने के साथ ही पुलिस आरोपी आरआई व तत्कालीन पटवारी को तलाशते हुए हाईकोर्ट पहुंची। इससे पहले ही विभाग के लोगों ने उसे सूचना दे दी और वो फरार हो गया। मामला सकरी थाना क्षेत्र का है।

पहले जांच में एसडीएम सहित अफसर को बताया गया दोषी: दरअसल, अरपा भैंसाझार प्रोजेक्ट जब शुरू हुआ और जमीन अधिग्रहण किया गया, तब मुआवजा बांटने की आड़ में 3.42 करोड़ का घोटाला कर शासन को ?आर्थिक क्षति पहुंचाई गई। मामला सामने आने पर तत्कालीन कलेक्टर सौरभ कुमार की अध्यक्षता में बनी कमेटी ने जांच की थी, तब तत्कालीन कोटा एसडीएम आनंद रूप तिवारी, कीर्तिमान सिंह राठौर, तत्कालीन नायब तहसीलदार मोहर साय सिदार, तत्कालीन राजस्व निरीक्षक हुल सिंह, तत्कालीन पटवारी दिलशाद अहमद, मुकेश साहू के अलावा जल संसाधन विभाग के तत्कालीन कार्यपालन अभियंता आरएस नायडु, अशोक तिवारी, तत्कालीन एसडीओ तखतपुर राजेंद्र प्रसाद मिश्रा, आरपी द्विवेदी, उप अभियंता तखतपुर आरके राजपूत को जिम्मेदार माना गया था।

दोबारा जांच में केवल पटवारी को माना दोषी: विधानसभा में जब मामला उठा तो बताया गया कि इस प्रोजेक्ट में मुआवजा बांटने की आड़ में 3.42 करोड़ का घोटाला कर शासन को आर्थिक क्षति पहुंचा गई है। लेकिन, दोषियों पर कार्रवाई नहीं की गई। जिसके बाद कलेक्टर अवनीश शरण ने दोबारा जांच टीम गठित की। जांच में पुष्टि हुई कि साहू ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व और भूअर्जन अधिकारी कोटा को भूअर्जन प्रकरण में एक खसरे का चार अलग-अलग रकबा दर्शाते हुए विरोधाभासी प्रतिवेदन दिया था।

बटांकित खसरा नंबरों को बिना सक्षम अधिकारी के आदेश के बगैर ही मर्ज कर दिया था। मामले में पटवारी साहू के खिलाफ विभागीय जांच चल रही थी। जांच के दौरान उसे सस्पेंड कर दिया गया था। जांच टीम ने सोमवार को कलेक्टर अवनीश शरण को रिपोर्ट सौंप दी है। इसमें आरआई मुकेश साहू द्वारा 3.42 करोड़ रुपये की गड़बड़ी करना साबित हुआ है। हैरानी की बात है कि पहले के जांच के दोषी अफसरों को क्लीन चिट दे दी गई।

खोजते हुए हाईकोर्ट पहुंची पुलिस, चकमा देकर भाग आरआई: कलेक्टर ने एसडीएम को दोषी सस्पेंड आरआई मुकेश साहू के खिलाफ एफआईआर के निर्देश दिए हैं। साथ ही उसे बर्खास्त करने के लिए शासन को पत्र भेजा गया है। जिसके बाद मंगलवार को आरोपी सकरी के तत्कालीन पटवारी और वर्तमान में आरआई के खिलाफ सकरी थाने में धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया।

इस दौरान उसके फरार होने की आशंका पर पुलिस एफआईआर करने से पहले पुलिस लोकेशन ट्रेस कर आरआई को गिरफ्तार करने 5 मिनट में हाईकोर्ट पहुंची। लेकिन, विभाग के ही लोगों ने उसे इसकी सूचना दे दी। जिस पर वो पुलिस को चकमा देकर भाग गया। जिसके बाद पुलिस को खाली हाथ लौटना पड़ा। अब पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

बुजुर्ग महिला से रेप, आरोपी को 10 साल की सजा

मुंह में कपड़ा डालकर 80 साल की बुजुर्ग से दुष्कर्म, अब कोर्ट ने सुनाया फैसला

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में एक 80 साल की बुजुर्ग महिला से दुष्कर्म करने वाले एक आरोपी को जगदलपुर एफटीसी कोर्ट ने 10 साल की जेल और 1 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है। आरोपी युवक ने बुजुर्ग महिला के मुंह में कपड़ा डाला और झाड़ियों में ले जाकर दुष्कर्म किया था। अब 3 साल बाद वह दोषी पाया गया और कोर्ट ने फैसला सुनाया है। जानकारी के मुताबिक, मामला 4 दिसंबर 2021 का है। इस दिन दरभा थाना क्षेत्र के एक गांव के रहने वाला युवक हेमधर कश्यप (32) गांव के खेत में गया था। यहां एक 80 साल की बुजुर्ग महिला खेत में चरोटा काट रही थी। इसने महिला से कहा था कि वो इस काम में उसकी मदद करेगा। इसी बहाने वह महिला को पकड़ लिया। उसके मुंह में उसने कपड़ा डाला ताकि वह चिल्ला न पाए।

युवक को 10 साल की जेल: जिसके बाद उसे झाड़ियों के पीछे लेकर गया जहां दुष्कर्म कर दिया। वारदात के बाद महिला ने इसकी जानकारी अपने बेटे और बहु को दी थी। फिर दरभा पुलिस थाने में एफआईआर दर्ज करवाई गई थी। मामला कोर्ट पहुंचा। वहीं अब एफटीसी कोर्ट ने आरोपी युवक को 10 साल जेल और 1 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है। शासन की ओर से अतिरिक्त लोक अभियोजक प्रीति वानखेड़े ने पैरवी की थी।

मनेंद्रगढ़ के वार्ड नंबर 14 में मतदाताओं को दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 के मद्देनजर नगर पालिका परिषद् मनेंद्रगढ़ के वार्ड क्रमांक 14 (पंडित नेहरू वार्ड) में मास्टर ट्रेनर शिवनाथ यादव ने 53 मतदाताओं को ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) के सही उपयोग की जानकारी दी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार आयोजित इस प्रशिक्षण सत्र में मतदाताओं को ईवीएम की कार्यप्रणाली को समझाया गया। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर शिवनाथ यादव ने बताया कि मतदान के समय ईवीएम का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है और किस तरह से निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव संपन्न कराए जाते हैं। उन्होंने मतदाताओं को उनके मताधिकार के प्रति जागरूक करते हुए यह भी समझाया कि वे बिना किसी भ्रम या संकोच के मतदान करें और अपने वोट का सही तरीके से प्रयोग करें। इस अवसर पर नोडल अधिकारी सहित वार्ड के अनेकों नागरिक भी उपस्थित रहे, जिन्होंने प्रशिक्षण सत्र में भाग लेकर मतदान प्रक्रिया को समझा और अपने संदेहों का समाधान प्राप्त किया।

सो रहे युवक की डंडे से कई वार कर हत्या

चोर कहे जाने की रंजिश पर हुई घटना, आरोपी को पुलिस ने जंगल से पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर (एजेंसी)। बलरामपुर जिले के ग्राम कोटराही में बीती रात दो बजे घर में सो रहे युवक के सिर पर पड़ोसी युवक ने डंडे से कई बार वार कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल युवक को वाड्रफनगर हॉस्पिटल लाया गया, जहां से उसे अंबिकापुर रेफर कर दिया गया। अंबिकापुर लाते समय प्रतापपुर के पास घायल युवक की मौत हो गई। घटना का कारण पुरानी रंजिश बताया गया है। घटना वाड्रफनगर चौकी क्षेत्र की है। पुलिस ने आरोपी युवक को हिरासत में ले लिया है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम कोटराही निवासी ओमप्रकाश कुशवाहा (25) बीती रात अपने घर में सो रहा था। उसके घर का दरवाजा बंद नहीं था। रात करीब दो बजे पड़ोस में रहने वाला युवक संजय खैरबार (22) टांगी लेकर ओमप्रकाश कुशवाहा के घर पहुंचा और दरवाजे को खोलकर अंदर दाखिल हुआ।

सो रहे युवक के सिर पर कई बार वार: आरोपी संजय खैरबार ने ओमप्रकाश कुशवाहा के सिर पर ताबड़तोड़ कई बार मोटे डंडे से वार किया। ओमप्रकाश कुशवाहा की चीख सुनकर उसकी बहन और बुजुर्ग माता-पिता नींद से उठ गए और आरोपी युवक को पकड़ लिया। आरोपी हाथ छुड़ाकर भाग निकला। लाठियों के वार से ओम प्रकाश कुशवाहा का सिर पूरी तरह से फट गया और घर में खून फैल गया। उसे तत्काल उपचार के लिए वाड्रफनगर हॉस्पिटल ले जाया गया।

रास्ते में मौत, आरोपी हिरासत में: वाड्रफनगर हॉस्पिटल से ओम प्रकाश कुशवाहा को लेकर परिजन अंबिकापुर रवाना हुए। रास्ते में प्रतापपुर के पास युवक की सासें थम गई। उसे प्रतापपुर हॉस्पिटल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना की सूचना पर वाड्रफनगर चौकी प्रभारी धीरेंद्र तिवारी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। घटना के बाद फरार आरोपी की पुलिस ने खोजबीन शुरू की। आरोपी जंगल में छिपा था, जिसे पुलिस ने घेराबंदी कर हिरासत में ले लिया।

चोर कहने पर था आक्रोशित, दी मौत: मृतक ओमप्रकाश कुशवाहा और आरोपी संजय खैरबार का घर 50 मीटर के फासले पर है। दोनों के घरों के बीच खेत है। आरोपी संजय खैरबार ने पुलिस पूछताछ में बताया कि एक साल पहले मृतक के घरवालों ने उसके खिलाफ चोरी की झूठी शिकायत की थी।

एक बार बीच में मृतक या घरवालों ने उसे चोर कहकर टोका था, जिसे लेकर वह ओमप्रकाश कुशवाहा से रंजिश रखने लगा था।

आरोपी को ओम प्रकाश कुशवाहा के घर और सोने के जगह की पूरी जानकारी थी। रात दो बजे वह घर में घुसा और उसने घटना को अंजाम दे दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 103(1) के तहत कार्रवाई की है।

सदमें में परिवार: घटना से ओमप्रकाश कुशवाहा का परिवार सदमे में है। वह घर का इकलौता बेटा था। उसकी एक बहन है, जो नर्सिंग कर रही है। मृतक ओमप्रकाश की मोटर बाइंडिंग की दुकान थी और परिवार का इकलौता कमाऊ सदस्य था। परिवार की कुछ जमीनें हैं, जिसपर वे खेती करते थे।

कोरबा-तिरुवनंतपुरम एक्सप्रेस 10 दिन तक रद्द

तीसरी लाइन के काम से कई ट्रेनों का रूट बदला, 10 से 19 फरवरी तक प्रभावित

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। कोरबा-तिरुवनंतपुरम-कोरबा एक्सप्रेस 10 दिन के लिए रद्द रहेगी। सिकंदराबाद रेल मंडल के खम्मम स्टेशन में तीसरी रेलवे लाइन का निर्माण कार्य चलेगा जिसके चलते ट्रेन 10 से 19 फरवरी तक कैंसल है।

रेलवे के मुताबिक, तिरुवनंतपुरम उत्तर से चलने वाली तिरुवनंतपुरम-कोरबा एक्सप्रेस (गाड़ी नंबर 22648) 10, 13 और 17 फरवरी को रद्द रहेगी। वहीं, कोरबा से चलने वाली कोरबा-तिरुवनंतपुरम एक्सप्रेस (गाड़ी नंबर 22647) 12, 15 और 19 फरवरी को रद्द रहेगी।

रेल्वे अधिकारियों ने बताया कि काजीपेट-विजयवाड़ा सेक्शन में निर्माण कार्य 10 से 20 फरवरी तक चलेगा। इसके अलावा, संबलपुर रेलवे स्टेशन यार्ड के आधुनिकीकरण कार्य के कारण 5 फरवरी से 30 अप्रैल तक कई ट्रेनों का मार्ग परिवर्तन किया गया है।

ये ट्रेनें सरला जंक्शन-संबलपुर सिटी होकर चलेंगी। इनमें भुवनेश्वर-मुंबई, पुरी-मुंबई, पुरी-जोधपुर, पुरी-लालगढ़ और विशाखापटनम-अमृतसर रूट की प्रमुख ट्रेनें शामिल हैं। रेल प्रशासन ने यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद प्रकट किया है।

नदी में डूबे 3 दोस्त..3 दिन बाद 2 शव मिले

2किमी दूर जलकुंभी में फंसा मिला एक शव, एक की तलाश अब भी जारी

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में नदी में नहाने गए 3 दोस्तों में से 2 के शव मिल गए हैं। 3 दिन तक रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद 2 शव गुरुवार को मिले हैं। अब भी एक की तलाश जारी है। सोमवार सुबह 11 बजे तीनों दोस्त नहाने आए हुए थे। जानकारी के मुताबिक, 27 साल के सागर चौधरी का शव हसदेव नदी में जलकुंभी के नीचे फंसा मिला। वहीं 19 साल के बजरंग प्रसाद का शव करीब 2 किलोमीटर दूर मिला। इनमें आशुतोष और बजरंग सीएसईबी कर्मी के बेटे हैं। जब तीनों अपने-अपने घर नहीं लौटे तो परिजन पुलिस थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद सीसीटीवी कैमरों के फुटेज तलाशने पर सोमवार को ही सवा 5 बजे तीनों बाइक से जाते हुए सीएसईबी मुख्य गेट के पास दिखे थे।

मोबाइल लोकेशन के आधार पर पहुंची पुलिस: सीसीटीवी कैमरे के बाद पुलिस ने तीनों दोस्तों के मोबाइल लोकेशन भी चेक किए। इसके आधार पर पुलिस हसदेव नदी के तट पर पहुंची। यहां उनके चप्पल-जूते, कपड़े, मोबाइल और बाइक नदी किनारे मिले थे। परिजनों ने भी कपड़े और जूतों से युवकों की पहचान की।

नदी किनारे कब पहुंचे किसी को नहीं पता: परिजनों ने बताया कि, आशुतोष सोनिकर आईटीआई कॉलेज का छात्र है। वहीं बजरंग प्रसाद और सागर चौधरी ईवीपीजी कॉलेज के छात्र हैं। परिजनों ने बताया कि तीनों युवक किन परिस्थितियों में नदी किनारे पहुंचे हैं, उनको इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।

जहां से लापता, वहां 15-20 फीट की गहराई: बताया जा रहा है कि, नदी में जिस जगह से तीनों लापता हुए हैं, वहां नदी की गहराई करीब 15-20 फीट की है। इसके अलावा जलकुंभी भी भारी मात्रा में है। ऐसे में आशंका है कि कहीं तीनों दोस्त जलकुंभी में तो नहीं फंस गए। या फिर एक को बचाने के चक्कर में तीनों फंस गए।

पुलिस बोली- नदी में बहने की आशंका: मामले में दर्री पुलिस का कहना है कि, तीनों दोस्तों ने लापता होने से पहले सोशल मीडिया पर एक साथ बैठे फोटो शेयर की थी। पुलिस ने आशंका जाहिर की है कि तीनों युवक नदी में बह गए हैं।

वार्ड क्रमांक 12 नई लेदरी में मतदाताओं को ईवीएम का दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2025 को निष्पक्ष एवं पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से नगर पंचायत नई लेदरी के वार्ड क्रमांक 12 में मतदाताओं को ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) की सही उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण आंगनबाड़ी केंद्र के पास आयोजित किया गया, साथ ही ईवीएम मशीन का प्रदर्शन भी किया गया। प्रशिक्षण के दौरान मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया की बारीकियों से अवगत कराया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार आयोजित इस सत्र में मास्टर ट्रेनर ने ईवीएम की कार्यप्रणाली को सरल भाषा में समझाया। उन्होंने मतदाताओं को बताया कि किस प्रकार वे अपने मताधिकार का सही उपयोग कर निष्पक्ष चुनाव में योगदान दे सकते हैं। प्रशिक्षण सत्र के दौरान उपस्थित नागरिकों ने मतदान प्रक्रिया से जुड़े अपने संदेहों का समाधान भी किया। इस अवसर पर नोडल अधिकारी समेत वार्ड क्रमांक 12 के अनेक मतदाता उपस्थित रहे।

मनेंद्रगढ़ के वार्ड क्रमांक 13 में मतदाताओं को ईवीएम का दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 के मद्देनजर को देखते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशन पर नगर पालिका परिषद् मनेंद्रगढ़ के वार्ड क्रमांक 13 (विवेकानंद वार्ड) में मास्टर ट्रेनर शिवनाथ यादव ने 33 मतदाताओं को ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) के सही उपयोग के बारे में प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता को सुनिश्चित करना था। प्रशिक्षण के दौरान मास्टर ट्रेनर ने मतदाताओं को ईवीएम की कार्यप्रणाली और मतदान प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि मतदान के दौरान ईवीएम का सही उपयोग किस प्रकार किया जाता है और इस उपकरण के माध्यम से निष्पक्ष चुनाव कैसे सुनिश्चित किए जा सकते हैं। इसके अलावा मतदाताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया और उन्हें बिना किसी भ्रम के मतदान करने की प्रेरणा दी गई। इस प्रशिक्षण सत्र में नोडल अधिकारी सहित वार्ड के कई नागरिक उपस्थित थे ।

नशा कारोबारी की 2.5 करोड़ की संपत्ति जब्त

अवैध कमाई को वैध करने भाई सहित कई पार्टनर के नाम बनाई संपत्ति, कई राज्यों में प्रॉपर्टी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में नशे का कारोबार करने वाले सरगना सुच्चा सिंह की 2 करोड़ 5 लाख से अधिक की संपत्ति को मुंबई के सफेमा कोर्ट ने सीज करने का आदेश दिया है। नशा कारोबारियों के खिलाफ कार्रवाई में पुलिस की यह बड़ी सफलता है। आरोपी ने नशे से की गई अवैध कमाई से अपने भाई के साथ ही नागपुर और दिल्ली के अपने पार्टनर के नाम पर संपत्ति बनाई थी, जिसे भी कोर्ट ने जब्त करने कहा है। पूरी कार्रवाई में सफेमा कोर्ट ने पुलिस की कार्रवाई को सही पाया है, जिसके बाद यह आदेश दिया है।

सुच्चा सिंह के खिलाफ 8 प्रकरण दर्ज थे: एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि नशीली दवा कारोबारी सुच्चा सिंह उर्फ संजीव छाबड़ा के खिलाफ सिविल लाइन समेत जिले के विभिन्न थानों में 8 प्रकरण दर्ज थे। आरोपी पिछले 15 साल से पुलिस की गिरफ्त से फरार था। सुच्चा सिंह को सीएसपी निमितेश सिंह व उनकी टीम ने जबलपुर से गिरफ्तार किया।

2 करोड़ 5 लाख से अधिक की संपत्ति जब्त: इसके बाद 8 जनवरी को संजीव सिंह छाबड़ा उर्फ सुच्चा की 2 करोड़ 5 लाख से अधिक की संपत्ति जब्त की गई। पूरे दस्तावेजों के साथ स्मगलर्स एंड फॉरेन एक्सचेंज मैनिपुलेटर्स (संपत्ति की जब्ती) कोर्ट में प्रकरण पेश किया। मुंबई स्थित साफेमा कोर्ट में 4 फरवरी को प्रकरण की सुनवाई हुई। पुलिस की जांच और पूरी संपत्ति के दस्तावेजों को वैध ठहराते हुए एनडीपीएस एक्ट की धारा 68 एफ (2) के तहत आदेश जारी किया गया है। कोर्ट में सुच्चा के अलावा उसके दिल्ली और नागपुर के सहयोगियों की तरफ से भी वकील मौजूद थे।

भाई के साथ पार्टनर के नाम पर अर्जित की संपत्ति: सीएसपी निमितेश सिंह ने बताया कि आरोपी संजीव कुमार छाबड़ा ने अपने माता-पिता, भाई और भाई की पत्नी के खातों में भी रकम ट्रांसफर कराई। उसी रकम को अपने खातों पर वापस लेकर करोड़ों की प्रॉपर्टी बनाई। इसके साथ ही नागपुर के पार्टनर कृष्णा रावटे और दिल्ली के पार्टनर शशांक अग्रवाल के नाम पर भी संपत्ति अर्जी की है। इसमें बिलासपुर के साथ ही मध्यप्रदेश के जबलपुर, महाराष्ट्र के नागपुर, फरीदाबाद और हरियाणा में जमीन खरीद कर मकान, दुकान और कॉम्प्लेक्स बनाया गया है।

कोर्ट के आदेश पर सुच्चा की ये संपत्ति जब्त: सुच्चा की नागपुर के मोदा में कुल 4 व्यावसायिक दुकान और एक 60 डिसमिल का प्लाट कीमत 1 करोड़ 7 लाख रुपए,जबलपुर मे कुल 4300 वर्गफीट मे निर्माणाधीन दो मंजिला मकान एवं निर्माणाधीन व्यावसायिक कॉम्पलेक्स कीमत 65 लाख रुपए, बैंक व शेयर मार्केट मे निवेश किए गए 33 लाख रुपए जब्त किया गया।

लेडी तस्कर काजल, सृष्टि, अक्षय की 15 लाख की संपत्ति जब्त: एसपी रजनेश सिंह ने बताया कि सिविल लाइन के एनडीपीएस एक्ट के मामले में गिरफ्तार काजल कुर्रे व पति अक्षय कुर्रे, श्रृष्टि कुर्रे व गोदावरी कुर्रे की 15 लाख की संपत्ति जब्त कर प्रकरण सफेमा को भेजा है। काजल और अक्षय के नाम पर सकरी में 1250 वर्गफीट प्लाट, सृष्टि के नाम पर स्विफ्ट कार-स्कूटी, अक्षय के नाम पर इयान कार समेत कुल 15 लाख रुपए की संपत्ति जब्त की गई है। अबतक पुलिस ने कुल 19 प्रकरणों में वाहन जब्त किए हैं।

मनेन्द्रगढ़ के अनेक वार्डो में मतदाताओं को ईवीएम का दिया गया प्रायोगिक प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगर पालिका परिषद मनेन्द्रगढ़ के वार्ड क्रमांक 03, शिवाजी वार्ड एवं वार्ड क्रमांक 05, चित्रांजन वार्ड और वार्ड क्रमांक 06, मालवीय वार्ड सहित फुहारा चौक और बस स्टैंड में मतदाताओं को मास्टर ट्रेनर शिवनाथ यादव के द्वारा इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के सही उपयोग का प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण आगामी नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2025 को निष्पक्ष, पारदर्शी और सुव्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान लगभग 145 मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया की बारीकियों एवं इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के संचालन की पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण सत्र के दौरान मास्टर ट्रेनर शिवनाथ यादव ने ईवीएम की कार्यप्रणाली को बहुत ही सरल और स्पष्ट तरीके से समझाया, ताकि लोग इसका सही तरीके से उपयोग कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार वे अपने मताधिकार का सही उपयोग कर निष्पक्ष चुनाव में योगदान दे सकते हैं और अपने वोट को पूरी तरह से सुरक्षित रख सकते हैं। इस अवसर पर आयोजित ईवीएम प्रदर्शनी में मतदाताओं को ईवीएम के अलग-अलग पहलुओं पर जानकारी दी गई और साथ ही साथ मतदाताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब भी दिए गए। इस सत्र में उपस्थित नागरिकों ने मतदान प्रक्रिया से जुड़े अपने संदेहों का समाधान भी किया, जिससे उनकी सोच में भी बदलाव आया और मतदान के प्रति विश्वास मजबूत हुआ। इस अवसर पर नोडल अधिकारी के साथ-साथ वार्ड के अनेक मतदाता उपस्थित थे ।

मध्यप्रदेश के शिवपुरी में एयरफोर्स का फाइटर प्लेन क्रैश

शिवपुरी/ग्वालियर एजेंसी। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में बहरेटा सानी गांव के पास एयरफोर्स का टू सीटर फाइटर प्लेन मिराज-2000 क्रैश हो गया। हादसा गुरुवार दोपहर करीब 2.40 बजे हुआ। प्लेन में दो पायलट थे। हादसे से पहले दोनों पायलटों ने खुद को इजेक्ट (बचकर निकले) कर लिया था। दोनों ही सुरक्षित हैं।

घटना की जानकारी मिलते ही एयरफोर्स की टीम हेलिकॉप्टर से मौके पर पहुंची। विमान में पायलट विक्रांत जाधव और विंग कमांडर विराज भोला सवार थे। एयरफोर्स की टीम दोनों को लेकर ग्वालियर रवाना हो गई।

बताया जा रहा है कि तीन विमानों ने ग्वालियर से नियमित प्रशिक्षण उड़ान भरी थी। इनमें से दो प्लेन सुरक्षित लौट गए। एयरफोर्स ने हादसे की शुरुआती वजह सिस्टम में खराबी बताते हुए जांच के आदेश दिए हैं।

अमेरिका में शादी करने गई युवती भी पकड़ी गई

चंडीगढ़ एजेंसी। अमेरिका से कल (5 फरवरी) जिन 30 पंजाबियों को डिपोर्ट किया गया, वे डंकी रूट से स पहुंचे थे। इसके लिए उन्होंने 40 से 50 लाख तक खर्च किए। किसी ने जमीन-गहने बेचे तो किसी ने मोटे ब्याज पर लाखों का कर्ज लिया। परिवार को उम्मीद थी कि अमेरिका पहुंचने के बाद उनके हालात बदल जाएंगे। कर्जा भी चुका देंगे। जमीन भी खरीद लेंगे।

मगर, अचानक अमेरिकी सरकार ने उन्हें डिपोर्ट कर दिया। हालांकि, परिजनों को इस बात का दिलासा है कि बच्चे अपने घर लौट आए हैं। मगर, अब खाएंगे क्या, कर्ज कैसे चुकाएंगे? ऐसी कई चिंताएं उन्हें खाए जा रही हैं। शादी का सपना लेकर अमेरिका पहुंची थी सुख अमृतसर की 26 साल की सुख कौर शादी करने के लिए अमेरिका गई थी। अमेरिका में उसके मामा की बहन सेटल है और उसी ने उसका रिश्ता वहां एक युवक से कराया। उसका मंगेतर सात साल से कैलिफोर्निया में है।

राहुल बोले- आरएसएस अपना विचार थोपना चाहती है

नई दिल्ली एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन के नए मसौदा नियमों का विरोध किया। उन्होंने कहा कि भाजपा देशभर में आरएसएस का एजेंडा चलाना चाहती है। वे एक विचार, एक इतिहास और एक भाषा थोपना चाहते हैं। राहुल ने कहा, आरएसएस का मकसद देश की अलग-अलग संस्कृतियों और इतिहासों को खत्म करना है। वे संविधान पर हमला करके अपने विचार को थोपना चाहते हैं। राहुल ने कहा कि हर राज्य की अपनी भाषा, संस्कृति और इतिहास है।

राज्यसभा में मोदी की 92 मिनट की स्पीच

नई दिल्ली, एजेंसी। पीएम नरेंद्र मोदी ने बुधवार को राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर जवाब दिया। उनकी 92 मिनट की स्पीच सरकार के सबका साथ- सबका विकास पर फोकस रही। इसके जरिए कांग्रेस पर निशाना साधा। पीएम ने अपने भाषण में बाबा साहेब अंबेडकर, आरक्षण, यूसीसी, आदिवासी, दिव्यांग, ट्रांसजेंडर, नारीशक्ति और इमरजेंसी का जिक्र किया। कांग्रेस और विपक्ष को घेरने के लिए कविताएं पढ़ीं। भाषण के बीच में कहा, माननीय खड़गे जी आपके सामने शेर सुनाते रहते हैं और सभापति जी, आप भी बड़ा मजा लेते रहते हैं। एक शेर मैंने भी पढ़ा था... पीएम ने कहा कि 1970 में जब चारों ओर कांग्रेस ही कांग्रेस का राज चलता था तब फिर गोपाल दास नीरज की एक और कविता फिर दीप जलेगा.. प्रकाशित हुई थी। उन्होंने कहा- इसके बाद पीएम ने पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की कविता का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि

आज से 40 साल पहले अटलजी ने कहा था कि %सूरज निकलेगा, अंधेरा छटेगा, कमल खिलेगा।

1. परिवारवाद- इतना बड़ा दल एक परिवार के लिए समर्पित हो गया है। कांग्रेस के मॉडल में फैमिली फर्स्ट सर्वोपरि रहा है। देश की जनता ने हमें तीसरी बार लगातार सेवा का मौका दिया। ये बताता है कि देश की जनता ने हमारे विकास के मॉडल को परखा है, समझा है और समर्थन दिया है। हमारा मॉडल- नेशन फर्स्ट है। इसी भावना के साथ हम देश की नीतियों पर काम करते हैं।

2. इमरजेंसी: देश ने इमरजेंसी का दौर भी देखा है। संविधान को किस प्रकार से कुचला गया। संविधान की स्प्रिट को रौंदा गया। ये सब सत्ता सुख के लिए किया गया। इमरजेंसी में प्रसिद्ध कलाकार देवानंद जी से कहा गया कि वह इमरजेंसी का समर्थन करें। देवानंद ने मना कर दिया था।

इसलिए दूरदर्शन पर देवानंद जी की फिल्में बैन कर दी गईं।

जयपुर में भीषण सड़क हादसे में 8 दोस्तों की मौत

जयपुर एजेंसी। जयपुर के दूदू में टायर फटने से बेकाबू हुई रोडवेज बस ने कार को टक्कर मार दी। इस भीषण सड़क हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई। 6 लोग घायल हो गए। हादसा जयपुर-अजमेर हाईवे पर मौखमपुरा में गुरुवार दोपहर करीब 3:45 बजे हुआ। एसपी आनंद कुमार शर्मा ने बताया- जोधपुर डिपो की रोडवेज बस जयपुर से अजमेर जा रही थी। ईको कार अजमेर से जयपुर की ओर आ रही थी। इसी दौरान अचानक बस का टायर फट गया। इससे बस बेकाबू हो गई। बस डिवाइडर कूदकर दूसरी

तरफ से आ रही कार से टकरा गई। हादसे में ईको कार बुरी तरह पिचक गई। उसके अंदर बैठे सभी आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। कार में सवार सभी लोग भीलवाड़ा के रहने वाले थे। हादसे में दिनेश कुमार पुत्र मदनलाल रेगर, सुरेश रेगर पुत्र मदनलाल रेगर, बबलू मेवाड़ा पुत्र मदनलाल मेवाड़ा, किशनलाल पुत्र जानकीलाल, रविकांत पुत्र मदनलाल, बाबू रेगर पुत्र मदनलाल, नारायण लाल बैरवा निवासी बड़लियास (भीलवाड़ा) और प्रमोद सुथार पुत्र मूलचंद निवासी मुकुंदपुरिया (भीलवाड़ा) के रूप में हुई। जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा जिले के कोटड़ी इलाके के रहने वाले सभी लोग भीलवाड़ा से महाकुंभ में प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) जा रहे थे। बड़लियास गांव के पूर्व सरपंच प्रकाश रेगर ने बताया- सभी युवक दोस्त थे।

सात आप विधायकों को भाजपा में शामिल होने के लिए 15-15 करोड़ का ऑफर मिला

नई दिल्ली एजेंसी। दिल्ली में विधानसभा चुनाव की वोटिंग 5 फरवरी को हो गई है, लेकिन भाजपा-आप अभी भी एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं।आप सांसद संजय सिंह ने गुरुवार को दावा किया कि आप के 7 विधायकों को पार्टी छोड़ने और भाजपा में शामिल होने के लिए 15-15 करोड़ का ऑफर दिया गया है।

उन्होंने कहा- हमने विधायकों से कहा है कि वे इस तरह की ऑडियो कॉल रिकॉर्ड करें और इसकी शिकायत करें। अगर कोई उनसे मिलता है, तो उसे छिपे हुए कैमरे से इसका वीडियो बनाना चाहिए।

संजय सिंह ने आगे कहा कि भाजपा ने मतगणना से पहले ही अपनी हार स्वीकार कर ली है। देश के बाकी हिस्सों की तरह भाजपा ने दिल्ली में भी पार्टियों को तोड़ने की राजनीति शुरू कर दी है।

दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों के लिए बुधवार को 60.44त्न लोगों ने मतदान किया।

शाम को वोटिंग खत्म होने के बाद 11 एग्जिट पोल आए। 9 में भाजपा को बहुमत तो 2 में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने का अनुमान है।

पोल ऑफ पोल्स में भाजपा को 39, आप को 30 और कांग्रेस को एक सीट मिलती दिख रही है। जेवीसी और पोल डायरी के एग्जिट पोल में अन्य को भी 1-1 सीट मिलने के आसार हैं।

महाकुंभ में पाकिस्तान से पहली बार आए 68 हिंदू

प्रयागराज एजेंसी। प्रयागराज महाकुंभ का आज 25वां दिन है। पाकिस्तान के सिंध से 68 हिंदू पहली बार महाकुंभ आए हैं। इस ग्रुप में डॉक्टर, इंजीनियर और कारोबारी शामिल हैं। मेला क्षेत्र के सेक्टर-9 में स्थित श्रीगुरुकार्ष्णि के शिविर में तीन दिन रहेंगे। कल, शुक्रवार को संगम में स्नान करेंगे। आज कई वीवीआईपी आज महाकुंभ आए हैं। केंद्रीय मंत्री श्रीपद नाइक, भाजपा सांसद रवि शंकर प्रसाद, हरियाणा सीएम नायब सिंह सैनी, मणिपुर के सीएम एन बीरेन सिंह ने संगम में डुबकी लगाई। सैनी पूरे परिवार के साथ महाकुंभ पहुंचे थे। बोट की सवारी भी की। मेले में एक बार फिर भीड़ बढ़ गई है। दोपहर होते-होते संगम जाने वाले सभी रास्ते श्रद्धालुओं से भर गए। अब आसपास के जिले और प्रयागराज शहर के लोग परिवार के साथ महाकुंभ पहुंचने लगे हैं। संगम में नावों के संचालन पर रोक लगा दी गई है। मेले के आसपास जो भी पार्किंग बनाई गई है, वह सभी भर गईं। सारी गाड़ियों को वापस किया जा रहा है, इसकी वजह से हर तरफ लंबा जाम लग गया है। प्रयागराज के बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी ने बताया, 7 से 12 फरवरी तक 8वीं तक स्कूल बंद रहेंगे। क्लासेज ऑनलाइन चलेंगी।

भारत को 2025 में मिलेगी एस-400 की चौथी स्क्वाड्रन

नई दिल्ली एजेंसी। एयरफोर्स ने जुलाई 2024 में एक थिएटर लेवल की वॉर प्रैक्टिस की थी। जिसमें एस-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम की क्षमताओं को जांचा गया था। भारत को एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम का चौथा स्क्वाड्रन साल 2025 के अंत तक मिल सकता है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, दिसंबर तक एस-400 स्क्वाड्रन भारत आ जाए। वहीं पांचवां और अंतिम स्क्वाड्रन 2026 में मिलने की उम्मीद है। भारत और रूस के बीच 2018 में एस-400 के पांच स्क्वाड्रन के लिए 35 हजार करोड़ की डील फाइनल हुई थी।

इसमें से 3 स्क्वाड्रन चीन और पाकिस्तान बॉर्डर पर तैनात हैं। 2 का आना बाकी है। एस-400 स्क्वाड्रन में 16 व्हीकल शामिल होते हैं, जिनमें लॉन्चर, रडार, कंट्रोल सेंटर और सहायक वाहन शामिल हैं। यह 600 किमी दूर टारगेट को ट्रैक कर लेता है और टारगेट हिट करने की रेंज 400 किमी है।भारतीय सेना ने जुलाई 2024 में मिसाइल की प्रैक्टिस की थी, 80 प्रतिशत टारगेट सटीक रहे इंडियन एयरफोर्स ने जुलाई 2024 में एस-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम की वॉर प्रैक्टिस की थी।

संसद में विपक्ष का हथकड़ी पहनकर प्रदर्शन

नई दिल्ली एजेंसी। भारतीयों के अमेरिका से डिपोर्टेशन मुद्दे पर गुरुवार को संसद में हंगामा हुआ। विपक्षी सांसदों ने सरकार शर्म करो के नारे लगाए। विपक्षी सांसदों ने बाहर आकर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। कुछ सांसद हाथों में हथकड़ी पहने नजर आए।

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा- आपकी चिंता के बारे में सरकार को मालूम है। ये विदेश नीति का मुद्दा है।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने राज्यसभा में कहा- अमेरिका से भारतीयों का डिपोर्टेशन पहली बार नहीं है। यह 2009 से हो रहा है। हम कभी भी अवैध मूवमेंट के पक्ष में नहीं हैं। इससे किसी भी देश की सुरक्षा में खतरा पैदा हो सकता है। उधर कांग्रेस सांसद रणदीप

सुरजेवाला ने कहा- हमारे नागरिकों के साथ आतंकवादियों जैसा बर्ताव किया गया।

तिरुपति मंदिर से 1 हजार कर्मचारियों को हटाने की मांग

नई दिल्ली एजेंसी। आंध्र प्रदेश भाजपा ने गुरुवार को आंध्र प्रदेश के तिरुमला तिरुपति देवस्थानम से 1 हजार गैर-हिंदू कर्मचारियों को हटाने की मांग की। आंध्र प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता और टीडीपी के सदस्य भानु प्रकाश रेड्डी ने कहा- बोर्ड के प्रतिनिधि 14 फरवरी को मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू से मिलेंगे और गैर-हिंदुओं को मंदिरों की सेवाओं से हटाने का निवेदन करेंगे। दूसरी तरफ वाईएसआरसीपी चीफ और पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी ने इस मुद्दे पर बयान देने से मना कर दिया। उन्होंने कहा- मुझे इसके बारे में डिटेल से पता नहीं है।

इससे पहले टीडीपी ने बुधवार को मंदिर के 18 कर्मचारियों को हटाने की जानकारी दी थी। इन सभी को टीडीपी के नियमों के खिलाफ जाकर काम करने का दोषी पाया गया है। ट्रस्ट ने सभी 18 कर्मचारियों के सामने दो शर्तें रखी हैं, या तो सभी किसी दूसरे सरकारी विभाग में ट्रांसफर ले लें या फिर (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति) ले लें।

ऐसा मंदिर की पवित्रता बनाए रखने के लिए किया जा रहा है।

मिल्कीपुर उपचुनाव, अखिलेश बोले- चुनाव आयोग मर चुका

उत्तर प्रदेश एजेंसी। मिल्कीपुर उपचुनाव के नतीजे 8 फरवरी को आएंगे, इससे पहले सियासत तेज है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सांसदों के साथ गुरुवार को संसद के बाहर प्रदर्शन किया। सांसदों ने एक कफन हाथ में ले रखा था, जिस पर चुनाव आयोग लिखा था। अखिलेश यादव ने कहा- यह भाजपा का चुनाव लड़ने का तरीका है। चुनाव आयोग मर गया है, सफेद कपड़ा भेंट करना

पड़ेगा।

कल सुबह से मैंने और पार्टी ने 500 शिकायतें की थीं, लेकिन एक्शन नहीं हुआ। मिल्कीपुर उपचुनाव को लेकर नगीना से सांसद चंद्रशेखर आजाद ने भी सवाल उठाए। कहा- भाजपा ने वहां लोकतंत्र का गला घोंटा। भाजपा सांसद रवि किशन ने अखिलेश के बयान पर पलटवार किया। कहा- ये लोग इम्मैच्योर (अपरिपक्व) बातें क्यों करते हैं? 6 महीने पहले जब ये 42 सीटें जीते थे, तब चुनाव आयोग हिमालय पर था, अद्भुत था और आज वह मरा गया। ये लोग सदन में कफन लेकर आ रहे हैं। लकड़ी भी ले आते। दिल्ली में अखिलेश ने कहा- चुनाव आयोग की बिल्डिंग बगल में ही है। सफेद कपड़ा लाना भूल गया।

आयोग पर सफेद कपड़ा डाल देना चाहिए।

अमेरिका से भारतीयों को हथकड़ी लगाना देश के लिए बड़े शर्म की बात

नई दिल्ली एजेंसी। पंजाब के सीएम भगवंत मान ने गुरुवार को कहा कि अमेरिकी सैन्य विमान में भारत वापस भेजे गए निर्वासितों को हथकड़ी लगाना ''देश के लिए बहुत शर्म की बात है। मान ने हरियाणा सरकार की भी आलोचना की, क्योंकि वह राज्य के निर्वासितों को अमृतसर हवाई अड्डे से ''पुलिस कैदी वैन में उनके संबंधित गृहनगर ले जा रही थी। विभिन्न राज्यों से 104 अवैध प्रवासियों को लेकर एक अमेरिकी सैन्य विमान बुधवार को अमृतसर में उतरा, जो अवैध प्रवासियों के खिलाफ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन द्वारा की गयी कार्रवाई के तहत निर्वासित भारतीयों का पहला जत्था था। मान ने 'एक्स% पर लिखा, ''अमेरिका ने जो किया, उसके लिए हमें बेहद अफसोस है... हमारे देश के नागरिकों को हथकड़ी लगाकर और जंजीरों से जकड़कर वापस भेजना देश के लिए बहुत शर्म की बात है। उन्होंने कहा, ''मानसिक और आर्थिक रूप से टूट चुके अमेरिका से निकाले गए भारतीयों के जख्मों पर मरहम लगाने के बजाय मोदी जी (की पार्टी) के नेतृत्व वाली हरियाणा सरकार उन्हें पुलिस कैदी वैन में ले गई जो उनके जख्मों पर नमक छिड़कने के बराबर है।

उमरिया में दो ट्रकों की भीषण टक्कर, 4 लोगों की मौके पर मौत

उमरिया एजेंसी। मध्यप्रदेश के उमरिया जिले में बृहस्पतिवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। दो तेज़ रफ्तार ट्रकों की आमने-सामने भिड़ंत हो गई, जिसमें तीन महिलाओं और एक पुरुष की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया।

पाली पुलिस थाने के प्रभारी मदन लाल मराबी के मुताबिक, यह दुर्घटना सुबह करीब 7:30 बजे राष्ट्रीय राजमार्ग-43 पर हुई। हादसा जिला मुख्यालय से लगभग 38 किलोमीटर दूर पाली इलाके में एक भोजनालय के

पास हुआ। एक ट्रक शहडोल से उमरिया की ओर जा रहा था, जबकि दूसरा ट्रक उल्टी दिशा से आ रहा था। दोनों ही ट्रक तेज़ गति में थे और अचानक आमने-सामने टकरा गए।

उमरिया जा रहे ट्रक में सवार तीन महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दूसरे ट्रक में सवार एक व्यक्ति की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई।

इस हादसे में एक व्यक्ति घायल हुआ है, जिसका इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। पुलिस का कहना है कि मृतकों की पहचान की कोशिश की जा रही है और उनके परिवारों को सूचना दी जा रही है।

पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है। प्राथमिक जांच में तेज़ रफ्तार को हादसे की वजह माना जा रहा है।

संतों ने देश की संस्कृति, एकता को बनाए रखने और ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई -अमित शाह

डोंगरगढ़ एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बृहस्पतिवार को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले की धर्मनगरी डोंगरगढ़ पहुंचे। यहां वे डोंगरगढ़ स्थित जैन तीर्थ चंद्रगिरी पर आयोजित 'प्रथम समाधि स्मारक महोत्सव' के समापन समारोह में शामिल हुए। अमित शाह ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि स्थल पहुंचकर आशीर्वाद प्राप्त किया और आचार्य श्री के समाधि स्मारक का भूमिपूजन किया। इस दौरान अमित शाह ने कहा कि भारत के संतों ने देश की संस्कृति, एकता को बनाए रखने और ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शाह ने कहा कि आजादी के बाद जब देश और सरकार पश्चिमी विचारों से प्रभावित होने लगी, तब जैन संत आचार्य विद्यासागर महाराज ही एकमात्र ऐसे संत थे, जिन्होंने भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति, हमारे धर्म और हमारी भाषाओं को संरक्षण देने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि पूरे देश को एक करने का काम जैन आचार्यों और मुनियों ने किया है।

शाह ने कहा, हमारे देश की संत परंपरा बहुत समृद्ध है और जब भी भारत को जरूरत पड़ी है, संत परंपरा ने अपनी भूमिका निभाई है। गुलामी के कालखंड में संतों ने भक्ति भावना के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जीवित रखा। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद जब सरकार और देश पश्चिमी विचारों से प्रभावित होने लगे, तब आचार्य जी ही एकमात्र ऐसे संत थे, जिन्होंने भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति, हमारे धर्म, हमारी भाषाओं को संभाले रखा।

संक्षिप्त समाचार

द्रविड़ की कार को ऑटो ने मारी टक्कर, भड़के पूर्व कप्तान

बेंगलुरु एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और कोच रहे राहुल द्रविड की कार को टक्कर मारे जाने का एक मामला सामना आये है। द्रविड़ की कार को एक ऑटो-रिक्शा ने टक्कर मारी थी। इससे आम तौर पर शांत रहने वाले द्रविड़ गुस्से में आ गये। द्रविड़ का ये गुस्से वाला रुप देखकर लोग हैरान रह गये। इसका एक वीडियो भी सामने आया है। इसमें द्रविड़ ऑटो ड्राइवर से गुस्से में बात करते हुए दिख रहे हैं। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार द्रविड़ की कार को एक मालवाहक ऑटो ने टक्कर मार दी हालांकि यह बात साफ नहीं हो पाई है कि द्रविड़ गाड़ी स्वयं चला रहे थे या उनके साथ ड्राइवर था। ये मामला बेंगलुरु के व्यस्त इलाके कनिंघम रोड का है। इस दौरान ऑटो चालक ने ट्रैफिक में फंसी द्रविड़ की कार को पीछे से टक्कर मारी। द्रविड़ ने ऑटो चालक का संपर्क नंबर और ऑटो का रजिस्ट्रेशन नंबर नोट किया और फिर वहां से चले गए। घटना के बारे में और जानकारी अभी सामने आनी बाकी है। यह घटना शाम 6ः30 बजे के आसपास हुई। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि दुर्घटना के संबंध में कोई मामला दर्ज नहीं किया गया है।

पाक के साथ मुकाबले में भारतीय टीम प्रबल दावेदार रहेगी : बासित

कराची एजेंसी। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर बासित अली ने कहा है कि 23 फरवरी को दुबई में होने वाले आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी मैच में भारतीय टीम जीत की प्रबल दावेदार रहेगी। भारत और पाक के बीच होने वाले इस मुकाबले का प्रशंसक बेसब्री इंतजार कर रहें हैं। चैम्पियंस ट्रॉफी में हालांकि पाकिस्तान का पलड़ा भारी रहा है। बासित का कहना है कि भारतीय टीम के पास पाक से कहीं अधिक अनुभव है। बासित ने कहा, 70 फीसदी भारत और 30 फीसदी पाक जीत का दावेदार रहेगा। इसका कारण है कि भारत के पास अधिक अनुभवी टीम है। वहीं अगर भारतीय टीम के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली और कप्तान रोहित फॉर्म में नहीं रहे तो मुकाबला बराबरी पर आ जाएगा। चैम्पियंस ट्रॉफी 2017 में अपने आखिरी मुकाबले में पाकिस्तान ने फाइनल में भारत को 180 रनों से हराकर बड़ी जीत दर्ज की थी। आठ टीमों के इस टूर्नामेंट में 15 मैच होंगे और ये मैच पाकिस्तान और दुबई में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट की तैयारी के लिए दोनों टीमें अपने-अपने अभियान शुरू करने से पहले एकदिवसीय सीरीज खेल रही है। भारतीय टीम जहां इंग्लैंड से तीन मैचों की सीरीज खेल रही है। वहीं पाकिस्तान भी दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड से त्रिकोणीय सीरीज खेलेगी।

भारतीय टीम को चैंपियंस ट्रॉफी में जीत दिला सकते हैं विराट और रोहित : गंभीर

मुंबई एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने खराब फार्म से जूझ रहे विराट कोहली और रोहित शर्मा का बचाव करते हुए कहा है कि आगामी चैम्पियंस ट्रॉफी में ये दोनो टीम को जीत दिला सकते हैं। विराट और रोहित पिछले कुछ समय से रन बनाने में लगातार असफल् रहे हैं। ऐसे में इनको टीम में रखे जाने पर भी सवाल उठ रहे थे। गंभीर ने कहा, उन्हें (चैंपियंस ट्रॉफी में) बड़ी भूमिका निभानी होगी। मुझे लगता है कि रोहित और विराट दोनों ड्रेसिंग रूम में बहुत अधिक मूल्य जोड़ते हैं। वे भारतीय क्रिकेट में भी बहुत मूल्य जोड़ते हैं। और मैंने पहले भी कहा है, वे लोग जीत के बहुत भूखे हैं, वे देश के लिए खेलना चाहते हैं। उनमें देश के लिए खेलने और अच्छा प्रदर्शन करने का जज्बा है। गंभीर ने कहा कि टीम चैंपियंस ट्रॉफी में एक पल के लिए भी आराम नहीं कर सकती क्योंकि 50 ओवर के विश्व कप की तुलना में उनके पास लय हासिल करने के लिए केवल तीन लीग मैच हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी 50 ओवर के विश्व कप की तुलना में पूरी तरह से अलग चुनौती है, इसलिए आप इस टूर्नामेंट में कहीं भी नहीं रुक सकते। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि हम वास्तव में अच्छी शुरुआत करने जा रहे हैं, क्योंकि अंततः, यदि आप आगे बढ़ना चाहते हैं और प्रतियोगिता जीतना चाहते हैं, तो आपको 5 गेम जीतने होंगे। गंभीर ने 23 फरवरी को दुबई में होने वाले भारत बनाम पाकिस्तान मैच को अधिक हाइप देने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि देखिए, हम चैंपियंस ट्रॉफी में यह सोचकर नहीं जाते कि 23वां मैच हमारे लिए सबसे अहम है। मुझे लगता है कि सभी खेल महत्वपूर्ण हैं। दुबई जाने का मिशन चैंपियंस ट्रॉफी जीतना है, न कि केवल एक विशेष गेम जीतना। महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे लगता है कि जब दो देश, भारत और पाकिस्तान, एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं, तो जाहिर तौर पर भावनाएं बहुत अधिक होती हैं पर अंततः मुकाबला वही रहता है।

चैंपियंस ट्रॉफी में मेजबान पाकिस्तान से सावधान रहे भारत और ऑस्ट्रेलिया : पोंटिंग

ऑस्ट्रेतियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा है कि 19 फरवरी से होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में मेजबान पाकिस्तान की टीम को कम आंकना भूल होगी। पोंटिंग के अनुसार भारत और ऑस्ट्रेलिया इस बार खिताब के प्रबल दावेदार माने जा रहे हैं पर इन्हें मेजबान टीम से सतर्क रहना होगा। पोंटिंग ने कहा कि टूर्नामेंट का फाइनल भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच हो सकता है पर इन्हें टूर्नामेंट में पाक से सावधान रहना होगा। भारतीय टीम अपने सभी मुकाबले दुबई में खेलेगी। पोंटिंग मानते हैं कि मेजबान दोनों टीमों को कड़ी चुनौती दे सकता है। उन्होंने कहा, भारत और ऑस्ट्रेलिया के अलावा हाल के समय में पाक ने भी काफी अच्छा खेला है। उसका एकदिवसीय में पिछले कुछ समय से अच्छा प्रदर्शन रहा है। हम जानते हैं कि वे बड़े टूर्नामेंटों में पिछले कुछ समय से इतना अच्छा नहीं कर रहे पर उन्होंने हाल में चीजों को थोड़ा सा सुलझा लिया है। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी की तैयारी में पाक ने पिछले साल तीन एकदिवसीय सीरीज खेलीं और सभी में जीत हासिल की। उसने ऑस्ट्रेलिया और जिम्बाब्वे में 2-1 से वापसी की जीत दर्ज की और फिर दक्षिण अफ्रीका में तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज में हराया।. विकेटकीपर-बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तानी टीम की कप्तानी करेंगे। गत चैंपियन 19 फरवरी को कराची के नेशनल स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। पाकिस्तान ने 2017 में खेले गए आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में भारत को 180 रनों से हराकर खिताब जीता था। आईसीसी से बात करते हुए पोंटिंग ने कहा, भारत और ऑस्ट्रेलिया को फिर से नजरअंदाज करना मुश्किल है। दोनों देशों में अभी के खिलाड़ियों को देखें। जब ये बड़े फाइनल और बड़े आईसीसी इवेंट्स आते हैं, तो प्रबल दावेदार होते हैं। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के इतिहास में भारत और ऑस्ट्रेलिया सबसे सफल टीमें हैं।

कोहली और रोहित शर्मा के बचाव में उतरें पीटरसन

लंदन। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन ने खराब फार्म के कारण आलोचना झेल रहे भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली और कप्तान रोहित शर्मा का समर्थन किया है। पीटरसन ने कहा कि विराट और रोहित ने क्या किया है ये सभी जानते हैं इसलिए इन्हें कुछ भी साबित करने की जरुरत नहीं है। उन्होंने दावा किया कि ये दोनो ही आने वाले समय में भारतीय टीम की ओर से खेलते रहेंगे। विराट और रोहित का प्रदर्शन ऑस्ट्रेलिया दौरे में खराब रहा था। ये दोनो ही हाल में रणजी ट्रॉफी में भी रन नहीं बना पाये हैं। ऐसे में इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली एकदिवसीय सीरीज में इन दोनो पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा। पीटरसन ने कहा कि कोहली और रोहित को कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं है। ये दोनो ही खेल के दिग्गज हैं। उन्होंने कोहली की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह लक्ष्य का पीछा करते हुए सबसे बेहतर प्रदर्शन करते हैं। उन्होंने कहा कि इन लोगों को किसी को कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं है, वे खेल के दिग्गज हैं।ये दोनो ही 35 और 36 साल की उम्र में हैं और कुछ और साल खेल सकते हैं। पीटरसन ने कहा कि वह कोहली और रोहित दोनों को खेलते हुए देखना पसंद करते हैं और उन्होंने दावा किया कि जब उन्होंने 2012 में उन्हें देखा था तो उन्हें पता था कि मौजूदा भारतीय कप्तान एक विशेष प्रतिभा वाले खिलाड़ी होंगे। पीटरसन ने कहा कि मैं उन दोनों विराट और रोहित को चाहता हूं।

हरभजन सिंह ने अभिषेक शर्मा को दी गेंदबाजी सुधारने की सलाह

चंडीगढ़ एजेंसी। भारतीय टीम के दिग्गज स्पिनर रहे हरभजन सिंह ने कहा है कि कि ऑलराउंडर अभिषेक शर्मा को अपनी गेंदबाजी को और बेहतर करना चाहिये। हरभजन के अनुसार अभिषेक आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए क्या कर सकते हैं ये सभी ने देखा है पर उन्हें अपने गेंदबाजी कौशल को निखारने पर काम करना होगा। हरभजन ने कहा कि अभिषेक के पास एक अच्छे स्पिनर बनने की सभी क्षमताएं है। ऐसे में गेंदबाजी कौशल को बढ़ाने से वह कई तरीकों से टीम के प्रति योगदान दे पायेंगे। हरभजन ने बातें मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में अभिषेक की पारी को देखकर कही हैं। उस मैच में अभिषेक ने अपनी पारी 13 छक्के और सात चौके लाकर 135 रन बनाये थे। वहीं गेंदबाजी करते हुए दो विकेट भी लिए थे जिससे भारतीय टीम बड़ी जीत दर्ज करने में सफल रही। अपने शुरुआती टी20 करियर में अभिषेक ने अब तक 19 ओवर में 6 विकेट लिए हैं। हरभजन ने कहा कि मैं अभिषेक को कुछ और गेंदबाजी करते देखना चाहता हूं। वह बहुत अच्छा गेंदबाज है। जब मैंने उसे अपने करियर की शुरुआत में देखा, तो मैंने देखा कि उसकी सीम स्थिति उत्कृष्ट थी। हालांकि, वह अपनी गेंदबाजी में उतना प्रयास नहीं करता जितना उसे करना चाहिये। जब भी वह मुझसे मिलता है, मैं उसे याद दिलाता हूं कि उसे गेंदबाजी करने की भी जरूरत है। बल्लेबाजी उनका पहला प्यार है और वह इसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करना जारी रखेंगे पर वह निश्चित रूप से अपनी गेंदबाजी पर अधिक काम कर सकते हैं। उनमें एक अच्छे बाएं हाथ के स्पिनर के सभी गुण मौजूद हैं। हरभजन ने साल 2017 में अभिषेक शर्मा के साथ पंजाब के लिए खेले मैच को याद किया। उन्होंने कहा कि अपने पहले ही मैच में वह निडरता से खेला।

क्रिकेट को अन्य सब बातों से ज्यादा महत्व देते हैं पंड्या

पुणे एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या ने कहा है कि क्रिकेट उनके लिए जीवन जीने का एक तरीका है और वह शेष सभी चीजों से अधिक महत्व इसे देते हैं। पंड्याअपनी आक्रामक बल्लेबाजी के साथ ही तेज गेंदबाजी के कारण टीम के लिए अहम भूमिका निभाते हैं। वह दोनो में ही कुशल है पर जब बात पसंद की आती है तो पंड्या को बल्लेबाजी अधिक अच्छी लगती है क्योंकि इससे वह बड़ा स्कोर बनाकर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाते हैं। पंड्या ने इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टी20 मैच में अच्छा प्रदर्शन करते हुए 53 रन बनाये थे। जिससे भारतीय टीम ये मैच जीतकर सीरीज में अपने नाम करने में सफल रही थी। एक वीडियो में पंड्या ने कहा कि बल्लेबाजी मेरी पहली पसंद है या मेरे दिल के अधिक करीब है। इसमें योगदान देने से मुझे हमेशा अच्छी नींद आती है। पंड्या ने पिछले साल वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप में अपनी गेंदबाजी से बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। पंड्या ने कहा कि मैं इस खेल को बहुत ज्यादा पसंद करता हूं। यह मेरा जीवन रहा है, यह मेरी प्राथमिकता रही है, यह मेरा पहला प्यार रहा है। खेल ज्यादा इंतजार नहीं कराता है, इसमें आपको मेहनत का फल एकदम मिलता है। पंड्या ने कहा कि खेल ने मुझे सबकुछ दिया है जिससेमुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मुझे खेल के प्रति बहुत ईमानदार और बहुत वफादार बनना होगा। इस खिलाड़ी ने कहा कि उनके प्रशंसक उनकी सबसे बड़ी संपत्ति है और वह उन्हें यथासंभव खुशी देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं हमेशा ऐसा व्यक्ति रहा हूं जो प्रशंसकों के लिए खेलता है। प्रशंसकों की मौजूदगी और उनके नारे से इससे मुझे अतिरिक्त प्रेरणा मिलती है। मैं वास्तव में उनके लिए अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं। पंड्या के लिए अमेरिका और वेस्टइंडीज में खेले गए टी20 विश्व कप जीतना किसी सपने के सच होने जैसा था।

38 साल के उस्मान को टीम में बनाये रखने के पक्ष में स्मिथ

गाले एजेंसी। श्रीलंका दौरे में ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी कर रहे स्टीव स्मिथ ने अनुभवी सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा की जमकर प्रशंसा की है। 38 साल ख्वाजा ने पहले ही टेस्ट में खराब फार्म से उबरते हुस शतकीय पारी खेली थी। स्मिथ ने कहा कि उम्र एक नंबर है और जब तक ख्वाजा रन बना रहे हैं उन्हें टीम में बनाये रखना चाहिये। स्मिथ के अनुसार इस खिलाड़ी को अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को आगे बढ़ाने का अवसर मिलना चाहिये। साथ ही कहा कि वह आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल और आगामी एशेज सीरीज में अहम भूमिका निभा सकते हैं। गाले में पहले टेस्ट में श्रीलंका पर ऑस्ट्रेलिया की शानदार जीत के दौरान ख्वाजा ने अपना सबसे अधिक टेस्ट स्कोर 232 रनाया। इस प्रकार वह विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र के शीर्ष पांच सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले

उम्र केवल एक नंबर

बल्लेबाजों की लिस्ट में शामिल हो गए। यह उनका पहला दोहरा शतक था और यह एशियाई परिस्थितियों में आया, जो मुख्य रूप से स्पिन के अनुकूल है। ख्वाजा हाल ही में 38 साल के हुए हैं और बल्लेबाजी क्रम में शीर्ष पर अपनी जगह बनाए रखने के लिए युवा सैम कोंस्टास जैसे खिलाड़ियों से नई चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन स्मिथ को कोई कारण नहीं दिखता कि अनुभवी खिलाड़ी अपनी इच्छानुसार इस भूमिका में क्यों नहीं बने रह सकते। मैच के बाद स्मिथ ने कहा, वह अभी भी असाधारण रूप से अच्छी बल्लेबाजी कर रहे हैं और उम्र केवल एक संख्या है। वह अभी भी सब कुछ सही कर रहे हैं, वह स्लिप में अच्छी तरह से कैच कर रहे हैं, वह एक वरिष्ठ खिलाड़ी हैं। वह वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी कर रहे हैं। मैं चयनकर्ता नहीं हूं पर मुझे भरोसा है कि जब तक वह खेलना चाहते हैं, तब तक मैं उनके साथ निश्चित रूप से खुश हूं। स्मिथ ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत के खिलाफ ख्वाजा की खराब बल्लेबाजका भी बचाव किया। इस सीरीज में वह 10 पारियों में सिर्फ 184 रन बना सके, जिसमें उनके नाम एक अर्धशतक के साथ लगभग 20 की औसत रही। उन्हें 9 में से पांच बार जसप्रीत बुमराह ने आउट किया। जून में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए ख्वाजा का शीर्ष क्रम में स्थान पक्का लग रहा है, लेकिन ऑस्ट्रेलिया को चयन में नई परेशानी का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि वे एकमात्र टेस्ट के लिए अपने सभी सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को अपनी एकादश में शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं। कोंस्टास ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के दौरान काफी प्रभावी प्रदर्शन दिखाया जिससे उन्हें चयन के लिए चुना गया, डेब्यू करने वाले जोश इंगलिस ने श्रीलंका के खिलाफ डेब्यू मैच में शतक जड़ा, जबकि स्टार बल्लेबाज ट्रैविस हेड ख्वाजा के साथ ओपनर के रूप में अपेक्षाकृत अपरिचित भूमिका में शानदार फॉर्म में दिखे।

सूर्यकुमार यादव के एक ही प्रकार से आउट होने पर भड़के आर अश्विन

चेन्नई एजेंसी। हाल में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने वाले स्पिनर आर अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में खराब शॉट लगाकर विकेट गंवाने के लिए कप्तान सूर्यकुमार यादव की आलोचना की है। अश्विन ने कहा कि सूर्या की कप्तानी अच्छी थी पर उनकी बल्लेबाजी चिन्ता का कारण रही। वह सीरीज की पांच पारियों में केवल 28 रन ही बना पाये। पूरी सीरीज में सूर्यकुमार फ्लिक शॉट खेलने के प्रयास में आउट हुए जबकि ये उनका पसंदीदा शॉट है। इसी प्रकार बल्लेबाज संजू सैमसन का प्रदर्शन भी बेहद खराब रहा। वह भी सभी पारियों में नाकाम रहे। सेमसन जोफ्रा आर्चर, मार्क वुड और ब्रायडन कार्स की गेंदों के सामने टिक नहीं पाये। अश्विन ने कहा कि समस्या सूर्यकुमार की बल्लेबाजी है। बेशक इस सीरीज में उनकी कप्तानी अच्छी थी पर उनके लिए रन बनाने भी जरुरी थी। सूर्या और सैमसन एक ही गेंद पर आउट हो रहे हैं। एक या दो मैचों में माना जा सकता है कि वह गलती है पर सभी मैचों में इसी प्रकार आउट होना चिन्ता की बात है। खिलाड़ियों को अपने अनुसार खेलना चाहिए पर उन्हें अपनी जिम्मेदारी भी निभानी होगी। सूर्या की तरह ही सैमसन भी सभी मैचों में विफल रहे और इसी कारण अब उनकी टीम में जगह भी खतरे में पड़ गयी है।

एकदिवसीय सीरीज से चैम्पियंस ट्रॉफी के पहले लय हासिल करने का अवसर मिलेगा : रुट

नागपुर एजेंसी। इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रूट ने कहा है कि भारतीय टीम के खिलाफ होने वाली एकदिवसीय सीरीज से उनकी टीम को चैम्पियंस ट्रॉफी लिए फायदा होगा। रुट के अनुसार इस सीरीज से उनकी टीम के खिलाड़ियों को लय हासिल करने का अवसर मिलेगा। दोनो ही टीमों के बीच 6 फरवरी से तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज होगी। वहीं चैम्पियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से पाकिस्तान में खेली जाएगी। रुट के अनुसार एकदिवसीय सीरीज में वे अपना आंकलन कर सकेंगे। इससे टीम को अपनी कमजोरियों को दूर करने का अवसर मिलेगा। चैम्पियंस ट्रॉफी में भाग लेने वाली टीमें जीतने वाले संयोजन का पता लगाने और टूर्नामेंट में जाने से

पहले कुछ गति प्राप्त करने के लिए एकदिवसीय सीरीज खेल रही हैं। रूट का मानना ??है कि तीन मैचों की सीरीज उन्हें जीत के इरादे से पाकिस्तान जाने से पहले अच्छी स्थिति में आने का अवसर देगी। उन्होंने कहा, जब आप कुछ करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, तो आप इसे पूरा करना चाहते हैं और पूरे टूर्नामेंट में खेलना चाहते हैं। इसके साथ ही सभी खिलाड़ी इंग्लैंड और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए खेलना चाहते हैं। टी20 सीरीज में भारतीय टीम से मिली हार के बाद हालांकि कोच ब्रेंडन मैकुलम की इंग्लैंड टीम एकदिवसीय प्रारूप में बेहतर प्रदर्शन कर वापसी करना चाहेगी। कोच ने कहा कहा, चैंपियंस ट्रॉफी से पहले तीन एकदिवीसय मैच हमारे लिए एक समूह के रूप में एक साथ रहने और उस टूर्नामेंट में जाने से पहले खुद को वास्तव में अच्छी स्थिति में लाने के लिए वास्तव में लाभदायक साबित होंगे। रूट ने इस प्रारूप में इंग्लैंड के लिए आखिरी बार भारत में आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 के दौरान खेला था।

मारुति सुजुकी ने की 2,12,251 यूनिट्स की बिक्री

नई दिल्ली एजेंसी। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने जनवरी 2025 में 2,12,251 यूनिट्स की बिक्री कर अपनी अब तक की सबसे अधिक मासिक सेल दर्ज की। यह आंकड़ा जनवरी 2024 में बेची गई 1,99,364 यूनिट्स से ज्यादा है, जिससे कंपनी ने सालाना आधार पर ग्रोथ दर्ज की। हालांकि, छोटी कारों के सेगमेंट में गिरावट देखी गई। ऑल्टो और एस-प्रेसो जैसी कारों की बिक्री में कमी आई, जिससे यह आंकड़ा जनवरी 2024 में 15,849 यूनिट्स से घटकर 14,247 यूनिट्स रह गया। इस सेगमेंट की वायटीडी सेल भी गिरकर 1,03,889 यूनिट्स पर आ गई, जो पिछले साल इसी अवधि में 1,15,483 यूनिट्स थी। दूसरी ओर, बलेनो, सेलेरियो और डिजायर जैसी कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री में वृद्धि दर्ज की गई। जनवरी 2024 में 76,533 यूनिट्स बिकी थीं, जो बढ़कर 82,241 यूनिट्स हो गई। हालांकि, इस सेगमेंट की वायटीडी सेल पिछले साल 6,86,544 यूनिट्स के मुकाबले घटकर 6,30,889 यूनिट्स रह गई। मारुति की सेडान सियाज़ की मांग में भी इजाफा हुआ। जनवरी 2024 में 363 यूनिट्स की बिक्री हुई थी, जो जनवरी 2025 में बढ़कर 768 यूनिट्स हो गई। वहीं, मारुति ईको की बिक्री जनवरी 2024 में 12,019 यूनिट्स थी, जो जनवरी 2025 में घटकर 11,250 यूनिट्स रह गई। कुल मिलाकर, जनवरी 2025 में मारुति सुजुकी की पैसेंजर व्हीकल्स की घरेलू बिक्री 1,73,599 यूनिट्स रही, जबकि वायटीडी आधार पर 14,49,233 यूनिट्स दर्ज की गई, जिससे कंपनी ने शानदार ग्रोथ हासिल की।हालांकि, वायटीडी सेल घटकर 6,629 यूनिट्स हो गई, जबकि पिछले साल यह 9,266 यूनिट्स थी। यूटिलिटी वाहनों की मजबूत मांग ने कंपनी की कुल बिक्री में बड़ा योगदान दिया। जनवरी 2025 में इस सेगमेंट में 65,093 यूनिट्स बिकीं।

अल्ट्रावॉयलेट ऑटोमोटिव ने लांच की एफ77 सुपरस्ट्रीट बाइक

भारत में दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी अल्ट्रावॉयलेट ऑटोमोटिव ने अपनी एफ77 सुपरस्ट्रीट इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लांच की है जिसकी शुरुआती कीमत 2.99 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) है। इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल एफ77 मैक 2 की तरह दो वेरिएंट में आती है ङ्क स्टैंडर्ड और रिकॉन। नई इलेक्ट्रिक बाइक के लिए बुकिंग आज से शुरू हो रही है, और डिलीवरी मार्च 2025 में शुरू होगी।

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में पेसमेकर क्लीनिक का उप मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ

ह्मदय रोगियों को मिलेगी राहत, नि:शुल्क होगी जांच : उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि रीवा में सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में प्रारंभ की जा रही पेसमेकर क्लीनिक ह्मदय रोगियों के लिए वरदान होगी। अब उन्हें जटिल ऑपरेशन के उपरांत लगाए जाने वाले पेसमेकर की जांच के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। इस क्लीनिक में मरीजों को निशुल्क जांच की सुविधा मिलेगी। शुक्ल ने सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में पेशमेकर क्लीनिक का शुभारंभ किया।

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि सुपर स्पेशलिटी अस्पताल विंध्य क्षेत्र में असाध्य रोगों के उपचार के लिए वरदान बन गया है। यहां के कुशल चिकित्सकों द्वारा मरीजों का कुशलता पूर्वक उपचार किया जा रहा है और उन्हें जटिल आपरेशन व अन्य उपचार के लिए बाहर जाने से मुक्ति मिल गई है। ह्मदय रोगियों को ऑपरेशन के उपरांत लगाए जाने वाले पेशमेकर की जांच के लिए पहले बाहर जाना पड़ता था। अब पेशमेकर लगने के उपरांत इस कंपनी के प्रोग्रामर से जांच नि:शुल्क हो सकेगी और मरीजों को बड़ी राहत मिलेगी। यह स्पेशल क्लीनिक हर माह के प्रथम गुरुवार को संचालित होगी, जिसमें प्रातः 9 बजे से दोपहर एक बजे तक मरीज अपनी जांच करा सकेंगे। भविष्य में इस सुविधा के विस्तार के भी कार्य होंगे। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा को मेडिकल हब बनाने तथा चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के लगातार प्रयास जारी हैं। उप मुख्यमंत्री ने सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में स्थापित की जाने वाली एमआरआई मशीन के लिए बनाए जा रहे स्थल का निरीक्षण किया तथा कार्य को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए ताकि एमआरआई मशीन जल्द स्थापित कराई जा सके। इस दौरान डीन मेडिकल कॉलेज डॉ सुनील अग्रवाल, अधीक्षक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल डॉ अक्षय श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष कार्डियोलॉजी विभाग डॉ व्हीडी त्रिपाठी, डॉ एसके त्रिपाठी सहित अन्य चिकित्सक उपस्थित रहे।

शादी से मना किया तो खुद को आग लगाई

युवक ने नाबालिग के घर जाकर खुद पर पेट्रोल छिड़का

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में एक युवक ने 16 साल की लड़की के घर जाकर खुद को आग लगा ली। बताया जा रहा है कि युवक नाबालिग से एकतरफा प्यार करता है। वह शादी के लिए नाबालिग पर दबाव बना रहा था।

जानकारी के अनुसार, धवारी मोहल्ले में रहने वाले राहुल कुशवाहा ने बुधवार को नाबालिग के घर पहुंचा था। वह नाबालिग को शादी करने के लिए कह रहा था। जब लड़की की मां और बहनों ने राहुल को घर से जाने के लिए कहा तो उसने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। जिसके बाद नाबालिग और उसके परिजनों ने पानी डालकर आग बुझाई। इसके बाद राहुल ने खुद मां को घटना की जानकारी दी।

परिजन राहुल को जबलपुर ले गए: राहुल गंभीर रूप से झुलस गया है। उसने खुद अपनी मां अंजू कुशवाहा को फोन कर घटना की जानकारी दी। राहुल को जिला अस्पताल लाया गया, जहां से उसे रीवा रेफर कर दिया गया। लेकिन परिजन उसे इलाज के लिए जबलपुर ले गए।

नाबालिग को कई दिनों से परेशान कर रहा था राहुल: पुलिस जांच में सामने आया कि राहुल लंबे समय से नाबालिग को परेशान कर रहा था। सीएसपी महेंद्र सिंह बताया है कि पीड़िता ने शिकायत दर्ज कराई है कि राहुल आए दिन उसे परेशान करता था और कई बार समझाने के बावजूद नहीं माना। नाबालिग ने स्पष्ट किया कि उसका राहुल के साथ कभी कोई प्रेम प्रसंग नहीं था। वह जबरन उसका पीछा कर रहा था।

आरोपी के पिता का आरोप-लड़की ने घर बुलाया था: राहुल के पिता रवि कुशवाहा ने बताया कि 2-3 साल से राहुल और उस लड़की की बात मोबाइल पर होती थी। बुधवार को किसी बात पर बहस हो गई। सुबह लड़की ने फोन कर राहुल को अपने घर बुलाया और बहन और मां के साथ मिलकर उस पर पेट्रोल डाल कर आग लगा दी।

राहुल की मां अंजू कुशवाहा ने बताया कि राहुल ने फोन कर बताया कि आग लग गई है। मैं दौड़ कर लड़की के घर पहुंची तो देखा राहुल गंभीर रूप से झुलसा हुआ था।

मां के साथ किराए के मकान में चलाता था दुकान: आरोपी राहुल सतना में किराए से रहता है। यहां उसकी किराए की दुकान है। इसके अलावा राहुल

पाक्सो एक्ट से संबंधित कार्यशाला का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। गोलवलकर महाविद्यालय रीवा में लैंगिक अपराधों से बालकों के संरक्षण अधिनियम पाक्सो एक्ट से संबंधित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिला लोक अभियोजन अधिकारी रवीन्द्र सिंह ने विद्यार्थियों को पाक्सो एक्ट के प्रावधानों की विस्तार से जानकारी दी। जिला विधिक सहायता अधिकारी अभय मिश्रा ने साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि इंटरनेट से जुड़े मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और लैपटाप का सावधानी से उपयोग करें। किसी भी अनजान फोन नंबर और बेवसाइट से जुड़ने का प्रयास न करें। साइबर सुरक्षा के मानकों का पालन करते हुए नये एप्प और बेवसाइट, लिंक डाउनलोड करें। श्री मिश्रा ने लैंगिक अपराधों को रोकने के लिए किये गये कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी।

टीएल बैठक में कलेक्टर ने की सीएम हेल्पलाइन एवं सीएम की घोषणाओं के कार्यों को लेकर समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार मऊगंज में गत दिवस कलेक्टर अजय श्रीवास्तव की अध्यक्षता में टीएल बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्यमंत्री की घोषणाओं की पूर्ति, सीएम हेल्पलाइन और फाइलेरिया उन्मूलन आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में जनवरी माह के प्रकरणों का 50 दिन से अधिक समय से लंबित प्रकरणों का निर्धारित समय के अंदर अनिवार्य रूप से निराकरण करें। सभी विभागीय अधिकारी विभागों से जुड़ी सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की प्रतिदिन रिपोर्ट प्रस्तुत करें। कलेक्टर द्वारा निर्देश दिए गए कि मुख्यमंत्री जी द्वारा विभिन्न योजनाओं की घोषणा की गई थी योजनाओं के कार्य को गति देने के लिए नियमानुसार योजना तैयार करें। हनुमना नवीन कॉलेज भवन, संस्कृत कॉलेज के पुनः प्रारंभ करने तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हनुमना के सिविल अस्पताल के रूप में उन्नयन, खटखरी बाईपास एवं तहसील मऊगंज नगर परिषद क्षेत्र में स्टेडियम निर्माण तथा सर्व सुविधा युक्त पार्क निर्माण, देवतालाब शिव मंदिर परिसर में सर्व सुविधा युक्त धर्मशाला निर्माण तथा देवतालाब कॉलेज में स्टेडियम तथा अन्य निर्माण कार्यों के कार्य योजना में प्रगति लाने हेतु योजना अनुसार कार्य करने के लिए निर्देश दिए गए। बैठक में आगामी 10 फरवरी से फाइलेरिया उन्मूलन हेतु चलाए जा रहे अभियान की सफलता हेतु विस्तृत कार्य योजना तैयार की गई। टीएल बैठक में अनुपस्थित श्रम निरीक्षक को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए।

टीएल बैठक के दौरान कलेक्टर श्री श्रीवास्तव ने सभी एसडीएम एवं तहसीलदारों को निर्देश दिये कि बोर्ड परीक्षाएं तथा अन्य परीक्षाएं इसी महीने प्रारंभ हो रही है। परीक्षाओं को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए सभी एसडीएम एवं तहसीलदार कोलाहल नियंत्रण अधिनियम का कठोरता से पालन सुनिश्चित कराएं। कोलाहल नियंत्रण अधिनियम का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें। बिना अनुमति और निर्धारित साउंड से तेज लाउडस्पीकर एवं डीजे अन्य प्रकार के ध्वनि विस्तारक बजते जा पाए जाने पर संबंधित के खिलाफकठोरता के साथ कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित कराएं। बैठक में संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता, डिप्टी कलेक्टर रश्मि चतुर्वेदी, एसडीएम बीके पांडेय, एसडीएम कमलेश पुरी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

पानी पिलाकर महिला से 90 हजार की ठगी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के नागौद कस्बे में बुधवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे बरकछी गांव की प्रविता सिंह के साथ दो बदमाशों ने लगभग 90 हजार रुपए की ठगी की। घटना अमिलिया टावर के सामने की है, जहां प्रविता सिंह खरीदारी के लिए पहुंची थी। एक युवक ने बनारस से आने का दावा करते हुए महिला पर संकट होने की बात कही।

इसी बीच दूसरा युवक भी वहां पहुंचा और कुछ देर बात कर पास में कहीं ले गए, जहां उन्होंने मिलकर महिला को पानी पिलाया। इस दौरान उन्होंने महिला को सम्मोहित कर उनका पर्स चुरा लिया, जिसमें 5 हजार रुपए नगद, 85 हजार के सोने-चांदी के गहने और एक मोबाइल फोन था।

सीसीटीवी फुटेज की मदद से पुलिस कर रही जांच: नागौद थाना प्रभारी अशोक पांडेय ने बताया कि दोनों आरोपी सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए हैं और उनकी तलाश की जा रही है। महत्वपूर्ण यह है कि इस घटना से एक दिन पहले मंगलवार को सतना शहर के मास्टर प्लान क्षेत्र में भी इसी तरह की वारदात हुई थी। वहां बदमाशों ने एक बुजुर्ग महिला को सम्मोहित कर उनके गहने लेकर फरार हो गए थे। पुलिस के अनुसार, सतना और मैहर क्षेत्र में इन दिनों यह गिरोह सक्रिय है।

निर्माण कार्यों को तय समय सीमा में पूरा करें : उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में विभिन्न योजनाओं से स्वीकृत निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए इसे तय समय सीमा में पूरा कराएं। जिले में कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्य जारी हैं। इन निर्माण कार्यों के पूरा होने पर जिले के विकास को गति मिलेगी। लोक निर्माण विभाग के संयुक्त कार्यालय भवन का निर्माण कार्य तत्काल शुरू कराएं। शेष निर्माण कार्य तीन महीने में पूरा करके इसका लोकार्पण कराएं। बीहर रिवर फ्रंट में भी शेष बचे कार्य को तेजी से पूरा करें। सर्किट हाउस के नवीन भवन का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है। इसकी साज-सज्जा का कार्य भी एक माह में पूरा कराकर इसे लोकार्पित कराएं।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण एजेंसी रीवा बाईपास का निर्माण कार्य तत्काल शुरू करे। इसे फोरलेन बनाने के लिए बिजली के पोल की शिफ्टिंग तत्काल कराएं। बारिश शुरू होने से पहले इसका बेस तैयार कर लें जिससे वर्षाकाल में भी निर्माण कार्य किया जा सके। जिला अस्पताल में ओपीडी भवन का भी निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है। फिनिशिंग वर्क भी एक माह में पूरा कराएं। उप मुख्यमंत्री ने पुनर्घनत्वीकरण योजना के तहत प्रस्तावित नवीन कार्यों के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड अनुज प्रताप सिंह ने बताया कि पॉलिटेक्निक कालेज के सामने इंजीनियरिंग कालेज के लिए एमटेक भवन तथा आवासीय भवन का निर्माण प्रस्तावित किया गया है। रीवा शहर में तीन स्थानों पर फल-सब्जी विक्रेताओं के लिए हाकर्स कार्नर भी प्रस्तावित किए गए हैं। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल, कलेक्टर प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवणे, क्षेत्रीय संचालक औद्योगिक विकास निगम यूके तिवारी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

हायर सेकण्डरी कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा 25 से

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश द्वारा हायर सेकण्डरी कक्षा 12वीं की वार्षिक परीक्षा 25 फरवरी से आरंभ हो रही है। हायर सेकण्डरी की परीक्षा 25 फरवरी से 25 मार्च तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा नियमित तथा स्वाध्यायी परीक्षार्थियों के लिए प्रातरू 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक होगी। सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा केन्द्र में प्रातरू 8 बजे एवं परीक्षा कक्ष में प्रातरू 8.30 बजे उपस्थित होना अनिवार्य होगा। परीक्षा कक्ष में प्रातरू 8.45 बजे के बाद किसी भी परीक्षार्थी को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। परीक्षार्थियों को परीक्षा प्रारंभ होने से 10 मिनट पूर्व अर्थात प्रातरू 8.50 बजे उत्तर पुस्तिका एवं 5 मिनट पूर्व अर्थात प्रातरू 8.55 बजे प्रश्न-पत्र दिए जाएंगे। प्रत्येक परीक्षार्थी का उपस्थिति पत्रक की फेटो से मिलान किया जायेगा। प्रवेश पत्र में भी फेटो लगाना अनिवार्य है। परीक्षार्थी यथा संभव पेयजल की बोतल स्वयं लेकर आएं।

कक्षा 12वीं के नियमित तथा स्वाध्यायी परीक्षार्थियों की परीक्षा का प्रथम प्रश्न पत्र मंगलवार 25 फरवरी को होगा। इस दिन हिन्दी का प्रश्न पत्र होगा। शुक्रवार 28 फरवरी को अंग्रेजी का प्रश्न पत्र होगा। शनिवार एक मार्च को उर्दू और मराठी का प्रश्न पत्र होगा। मंगलवार 4 मार्च को एनिमल हस्बैण्डरी मिल्क ट्रेड पोल्ट्रीफार्मिंग एवं फिशरीज, विज्ञान के तत्व, भारतीय कला का इतिहास, अर्थशास्त्र तथा फिजिक्स का प्रश्न पत्र होगा। बुधवार 5 मार्च को बायोटेक्नॉलाजी, गायन वादन एवं तबला पखावज का प्रश्नपत्र होगा।

प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड ने सिजहटा और बगहाई की 33 महिलाओं को सिलाई मशीन और प्रशिक्षण प्रमाण पत्र देकर सशक्त बनाया

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड, मनकहरी ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल के तहत सफलतापूर्वक तीन महीने का सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने पर सिजहटा और बगहाई की 33 महिलाओं को सिलाई मशीन और प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित किए।

उपरोक्त आशय की जानकारी देते हुये प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के ए.जी.एम. जनसंपर्क देवेन्द्र मिश्रा ने कंपनी द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्वों द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों का विवरण देते हुये बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आईएएस और जिला पंचायत सतना की सीईओ सुश्री संजना जैन थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम पंचायत सिजहटा के सरपंच अनिल सिंह ने की, जबकि ग्राम पंचायत बगहाई की सरपंच श्रीमती आशा मनोज साकेत विशिष्ट अतिथि रहीं। इस अवसर पर मनीष कुमार सिन्हा सीनियर वाइस प्रेसीडेंट-एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स और राजेश कुमार जेजीएम-टैलेन्ट मैनेजमेंट एंड आईएमएस सहित प्रिज्म जॉनसन के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

उन्होने आगे बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक तरीके से मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ हुई, तत्पश्चात अतिथियों को गुलदस्ते, नारियल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रिज्म जॉनसन के चल रहे सीएसआर कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की गई।

मनीष कुमार सिन्हा सीनियर वाइस प्रेसीडेंट-एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स ने प्रशिक्षुओं को आत्मनिर्भरता और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के बारे में जानकारी दी। उन्होने आगे कहा कि आपके पास प्रतिभा है, आपने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, अब आवश्यकता है अपने भीतर के आत्मविश्वास को जगाने की। यह मानिए कि आप कुछ भी कर सकती हैं। अपने परिवार और समाज को इस बदलाव में शामिल करें और अपने काम से समाज को प्रेरणा दें।

सभा को संबोधित करते हुए सुश्री संजना जैन, आईएएस और जिला पंचायत सतना की सीईओ ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में प्रिज्म सीमेंट के सराहनीय कार्य की प्रशंसा की। उन्होने कहा कि हमारे समाज की प्रगति तभी संभव है जब हम महिलाओं को सशक्त बनाएंगे। सिलाई-कढ़ाई जैसे कौशल महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सक्षम बनाते हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने का भी अवसर देते हैं। इस प्रशिक्षण के माध्यम से आप सभी ने यह सिद्ध कर दिया है कि सीखने और आगे बढ़ने की कोई उम्र नहीं होती। अपने हुनर को अपनी पहचान बनाइए। जब आप आगे बढ़ेंगी, तो पूरा समाज आगे बढ़ेगा।

इस अवसर पर श्रीमती निधि पाण्डेय को सम्मानित किया गया जिन्होंने प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के कौशल विकास कार्यक्रम के तहत ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण लेकर इस वर्ष नेशनल अवार्ड जीता था। यह अवार्ड अभिनेत्री अमीषा पटेल द्वारा प्रदान किया गया। जिसका उदाहरण सुश्री संजना जैन, आईएएस और जिला पंचायत सतना की सीईओ ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को दिया और कहा कि आप लोग भी दूसरों के लिये प्रेरणास्रोत बनिये।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण जिला पंचायत सीईओ द्वारा सिलाई मशीनों और प्रमाण पत्रों का वितरण था, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। नव प्रशिक्षित महिलाओं ने अपनी खुशी और आभार व्यक्त किया और इस पहल को वित्तीय स्वतंत्रता की ओर अपनी यात्रा में एक मील का पत्थर माना।

संभागीय समीक्षा बैठक के निर्णयों पर तत्परता से कार्यवाही करें : कमिश्नर

निर्देशों पर समुचित कार्यवाही कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करें : कमिश्नर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने विकास कार्यों की संभागीय समीक्षा बैठक के पालन प्रतिवेदन की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री उप मुख्यमंत्री, सांसद एवं विधायकगणों द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें। निर्माण कार्यों के संबंध में दिए गए निर्देशों पर तत्परता से कार्यवाही करें। शीघ्र ही जिला स्तर पर समीक्षा बैठकें आयोजित करके जिलों के विकास की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। संभागीय बैठक के निर्देशों पर समुचित कार्यवाही करके पालन प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। कार्यपालन यंत्री जल संसाधन त्योंथर फ्लो नहर में अंतिम छोर तक पानी पहुंचना सुनिश्चित करें। संयुक्त संचालक पशुपालन गौशालाओं के गौवंश की देखभाल के लिए मनरेगा से गौसेवक की तैनाती का प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

कमिश्नर ने कहा कि जिला प्रबंधक जल निगम कदैला समूह नलजल योजना का कार्य 31 मार्च तक अनिवार्य रूप से पूरा कराकर योजना में शामिल गांवों की प्रत्येक बसाहट में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें। टमस नदी पर पुल बनाने के लिए 40 करोड़ रुपए की कार्ययोजना बनाई गई है। इसकी प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त कर निर्माण कार्य शुरू करने की कार्यवाही करें। मैहर-उमरिया मार्ग पर छोटी महानदी पर क्षतिग्रस्त पुल के सुधार के लिए टेण्डर की कार्यवाही एक माह में पूरा कराएं, जिससे पुल का सुधार कार्य शुरू किया जा सके। बैठक में बताया गया कि चित्रकूट क्षेत्र में सिंचाई सुविधा देने के लिए पाँच छोटे बांधों का निर्माण कार्य मंजूर हो गया है। सीधी से सिंगरौली फोरलेन सड़क निर्माण का कार्य जारी है। सतना जिले में दौरी सागर बांध निर्माण के डूब क्षेत्र में आने वाली वन भूमि के बदले राजस्व भूमि देने का प्रस्ताव वन विभाग को दिया जा चुका है। सीधी जिले में 108 आपातकालीन सेवा वाहनों की क्षेत्रीय स्तर पर तैनाती कर दी गई है। अतिरिक्त वाहनों के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा गया है। मैहर जिले में संयुक्त कलेक्ट्रेट भवन का निर्माण कार्य पुनर्घनत्वीकरण योजना से मंजूर हो गया है। बैठक में रामनगर माइक्रो सिंचाई परियोजना, गोड़ सिंचाई परियोजना, सिरमौर से डभौरा सड़क के सुधार, सीधी जिले में पिपरोहा से मोहनिया मार्ग की गुणवत्ता की जाँच तथा बेला में सड़कों के जंक्शन में खराब सड़क के सुधार के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए गए। बैठक में संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, कार्यपालन यंत्री जल संसाधन मनोज तिवारी, क्षेत्रीय संचालक औद्योगिक विकास निगम यूके तिवारी, अधीक्षण यंत्री आरईएस अतुल चतुर्वेदी, कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड अनुज प्रताप सिंह, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा आरपी सिंह, उप संचालक स्वास्थ्य डॉ मेहरा, सहायक संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।